सम्पादकीय...

धर्म स्थापना दिवस : आत्मचिंतन का अवसर

वर्षभर में आयोजित होने वाले अनेकानेक उत्सव, पर्व, त्यौहार व धार्मिक कार्यक्रम जहां हमें अपार प्रसन्नता व स्फूर्ति प्रदान करते हैं, वहीं वे आत्मचिंतन के द्वार भी खोलते हैं। प्रत्येक उत्सव का अपना एक गंभीर अर्थ व संदेश भी होता है जिसकी ओर हम बहुत कम ध्यान देते हैं। जब तक हम उत्सव विशेष के पीछे छिपे गहन अर्थ को समझकर उसका चिंतन नहीं करते तब तक उसका आयोजन केवल एक औपचारिकता ही रहती है। वैसे तो मनुष्य एक चिंतनशील प्राणी है फिर भी ये उत्सव उसे विशेष चिंतन हेतु प्रेरित करते हैं। यह अक्तूबर मास पर्वोत्सवों की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। दशहरे व दिवाली के अतिरिक्त बिश्नोई धर्म स्थापना दिवस भी इसी मास में है। जननी जन्मभूमि की भांति जन्म दिवस भी विशेष ही होता है।

20 अक्तूबर, 2011 को बिश्नोई धर्म अपनी 526 वर्ष की यात्रा पूर्ण कर 527वें वर्ष में प्रवेश कर जाएगा। निश्चित रूप से यह दिवस हमारे लिए आत्मावलोकन का समय है। हमें अपने अंतर्मन को टटोलकर यह देखना चाहिए कि गुरु जंभेश्वर जी भगवान ने किन परिस्थितियों में किस उद्देश्य को लेकर यह पंथ चलाया था। गुरु जंभेश्वर जी द्वारा प्रणीत 29 धर्म नियमों का कितनी दृढ़ता से हम पालन कर रहे हैं? जिस पथ पर हम अग्रसर हैं वह पथ हमें कहां ले जायेगा?

इसमें किसी को कोई संदेह नहीं है कि गुरु जांभोजी द्वारा प्रणीत उन्नतीस धर्म नियम उत्तम जीवन शैली की आचार संहिता है तथा शत-प्रतिशत वैज्ञानिक व अधुना समय में पूर्णत: प्रासंगिक है और इनकी पालना ही बिश्नोई की पहचान है। वस्तुत: पिछली एक शताब्दी से पूरे विश्व में प्रत्येक स्तर पर तीव्र परिवर्तन हुआ है, जिससे पुरातन मूल्यों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। ऐसी परिस्थिति में बिश्नोई समाज इस आधुनिकता की चकाचौंध से कैसे बच सकता था। फलस्वरूप इस आधुनिकता की चकाचौंध में हम 29 धर्म नियमों से भटक रहे हैं जो हमारे अस्तित्व के लिए बहुत बड़ा खतरा है। विष्णु अवतार गुरु जंभेश्वर त्रिकालदर्शी थे इसलिए उन द्वारा प्रणीत धर्म नियम भविष्य के कवच हैं परंतु जब हम स्वयं ही अपने कवच को क्षीण करने पर तुले हुए हैं तो दोष किसे देंगे? कहना न होगा कि आज हम नशा, अहंकार, वाद-विवाद, झूठ, चुगली आदि विकारों से ग्रस्त होते जा रहे हैं और क्षमा, दया, शील, संतोष, पर्यावरण रक्षा, भजन-संध्या, हवन जैसे सद्गुणों व सत्कार्यों से दूर होते जा रहे हैं जो बहुत बड़ी चिन्ता का विषय है।

20 अक्तूबर को 'बिश्नोई धर्म स्थापना दिवस' है। आओ इसे धूमधाम से मनाने के साथ-साथ 'क्या खोया, क्या पाया' का आत्मचिंतन भी करें। धर्म स्थापना दिवस के साथ-साथ दशहरे एवं दीपावली महापर्व की ढेर सारी शुभकामनाएं।

गुरुवाणी

सबद – 1

प्रसंग : तब सो द्विज आयके, लाघव कियो उपाय।
दैवी को सुमरत तवै, इन्द्र बाहन में सराय।1।
चौमुख दीप बनाय के, अगन दिये संवार।
वो जगावै वो बूझै, बूझत न लागै वार।2।
सिर धुनै फूं फूं करै, बहुता करे प्रज्ञान।
जम्भ गुरु तब बोलिया, सुण रे मूढ़ अज्ञान।3।
काचै करवै जल रख्यों, शब्द जगायो दीप।
ब्राह्मण को परचा दिया, ऐसो अचरज कीन।4।
जो बूझा सोई कहयों, अलख लखायों भेव।
धोखा सबै गंवाय कै, शब्द कहयौ जम्भदेव।5।

पूर्व देश निवासी उस पुरोहित ने आकर अति शीघ्र बाल रूप में गुरु जांभोजी का उपचार प्रारम्भ किया। सर्व प्रथम सम्पूर्ण आंगन को गऊ के गोबर से लिपवाया उसमें एक चौमुखा दीपक बनवाकर, घृत से भर कर रखवाया। स्वयं रेशम की गद्दी बिछवाकर उसके उपर बैठा तथा बालरूप गुरु जांभोजी को भूमि पर बैठाया। दैवी का जप करने लगा, चुन चुन कर उड़द जाम्भोजी पर फेंकने लगा। दीपक ज्यूं ज्यूं जलता त्यूं त्यूं बुझ जाता। इस प्रकार करते हुए आधा दिन व्यतीत हो गया था। तब वह पुरोहित करने लगा कि इस बालक पर तो कोई जबरदस्त देव रूठा हुआ है यदि यह दीपक जल जाय तो मैं इस बालक को ठीक कर सकता हूं।

बालरूप जाम्भोजी वहां से उठ खड़े हुए और कच्चे सूत का धागा लिया तथा कुम्हार के घर जाकर बिना पका हुआ घड़ा लेकर कूवे के उपर जाकर अन्दर लटकाकर जल निकाला और वापिस घर आकर उन्हीं दीपकों में जल डाल कर, चुटकी बजाकर दीपकों को प्रज्ज्वलित कर दिया। यह आश्चर्य जनित घटना पीपासर ग्रामवासियों सहित उस पुरोहित ने देखी, नत मस्तक होकर प्रार्थना करने लगा–

हे देव! अब आप ही कुछ बोलिए मुझे सन्मार्ग दिखलाइये, जिससे मेरा आवागमन मिट जाये। तभी लोगों के सहित पुरोहित के प्रति यह प्रथम शब्दोच्चारण किया–

सबद- ओ३म् गुरु चीन्हों गुरु चीन्ह पुरोहित, गुरु मुख धर्म बखाणी।

भावार्थ– ओ३म् यह परम पिता परमात्मा सर्वेश्वर अनादि निराकार भगवान विष्णु का ही परम प्रिय नाम है। नाम से ही नामी का ज्ञान होता है। सर्वप्रथम सृष्टि के आदि काल में तो वह परम सत्ता ओ३म् नाम से ही जानी जाती थी परन्तु आगे समयानुसार ही सत्ता शिव, राम, कृष्ण आदि नामों से जानी जाने लगी। उपनिषद् में कहा भी है – ओमिति एकाक्षर ब्रह्म उद्गीथमुपासीत गीता में – 'ओमित्येकाक्षर ब्रह्म व्यवहारन् मामनुस्मरन्' पातंजलि ने कहा– 'तस्य वाचक प्रणव:' इत्यादि निर्देश दिये गये हैं। ओ३म् का ध्वनि से उच्चारण किया जाता है तब वह परमात्मा अति प्रसन्न होता है क्योंकि वह परमात्मा का सर्वाधिक प्रिय नाम है, इसलिए शब्दों के प्रारम्भ में यह ओ३म् का पाठ देना उचित ही है। इससे मंगल स्तुति नमस्कारादि सभी नियमों का समुचित पालन हो जाता है।

गुरु 'श्री देवजी कहते हैं– हे संसार के लोगो! आप सभी लोग सर्वदा ही यदि अपना कल्याण चाहते हैं तो उस परमपिता परमात्मा परमेश्वर परम सत्ता ओ३म् नामी गुरु को पहचानो। यहां पर चिह्नों का अर्थ मानना या स्मरण करना नहीं है, यहां चिह्नों का अर्थ पहचान करना है। गुरु की पहचान कुछ सद्गुणों द्वारा ही हो सकती है वे गुण आगे बतलाये जाएंगे। हे पुरोहित! तू भी गुरु को पहचान तथा गुरुमुखी होकर सद्धर्म का उपदेश कर तथा मनमुखी धर्म का परित्याग कर, क्योंकि गुरुमुख से निकला हुआ वचन सदा धर्म की ओर ले जाने वाला ही होगा।

जो गुरु होयबा सहजे शीले नादे वेदे,
तिहिं गुरु का आलिंकार पिछांणी।

सहज स्वभाव से ही शील व्रतधारी, शब्द विद्या का ज्ञाता, अनहद नाद ध्वनि का श्रोता व सम्पूर्ण वेदों का ज्ञाता तथा वक्ता यदि गुरु है तो उस गुरु के ये गुण अलंकार ही होंगे। उन अलंकारों से विभूषित गुरु को पहचान कर लेना। वास्तव में इन विशेषणों से युक्त ही सद्गुरु हो सकता है इन गुणों के बिना सतगुरु होने की कल्पना नहीं की जा सकती।

छव दरसण जिहिं के रूपण थापण,
संसार बरतण निज कर थरप्या सो गुरु प्रत्यक्ष जांणी।

भारतीय आस्तिक ऋषियों द्वारा रचित न्याय, सांख्य, मीमांसा, वैशेषिक, योग, वेदान्त ये छ: दर्शन जिस परमात्मा स्वरूप सद्गुरु के सम्बन्ध में अति विस्तार से वर्णन करते हैं। इन्हीं छ: शास्त्रों मे जीव ईश्वर और जगत के बारे में अति सूक्ष्मता से वर्णन हुआ है। इस संसार रूपी घट बरतन

को जिस सतगुरु रूपी परमात्मा ने अपने ही हाथों द्वारा बनाया है। उसी सतगुरु को हे पुरोहित! तू यहां पर प्रत्यक्ष देखकर पहचान।

जिहिं के खरतर गोठ निरोतर वाचा, रहिया रुद्र समाणी।

जिस परमात्म स्वरूप गुरु के बारे में विचार करते हुए अच्छी-अच्छी विद्वानों की संगोष्ठियां भी चुप हो जाती है। अपनी सामर्थ्यनुसार विचार कर लेने के पश्चात वेद की ध्वनि का अनुसरण करती हुई 'नेति-नेति' कहते हुए मौन हो जाती है, क्योंकि परमात्मा वाणी का विषय नहीं है, अनुभव गम्य विषय को वाणी प्रगट नहीं कर सकती, क्योंकि वह परमात्मा रुद्र रूप से सर्वत्र समाया हुआ है। जिस प्रकार से शरीर में रूधिर समान रूप से सर्वत्र है उसी प्रकार से वह चेतन-ज्योति भी सर्वत्र सामान्य रूप से समायी हुई है।

गुरु आप संतोषी अवरां पोखी, तंत महारस बाणी।

गुरु आप तो स्वयं संतोषी हैं अर्थात् कभी किसी से कुछ भी लेने की इच्छा नहीं रखते, क्योंकि वह तो सम्पूर्ण जीवों का पालन-पोषण करने वाले हैं तथा जीवों के पास कुछ देने को भी नहीं है, केवल अहंकार ही अपनी निजी संपत्ति है उसे हम समर्पण कर सकते हैं, यही सच्चा त्याग हो सकता है तथा सद्गुरु की वाणी तत्त्व को बतलाने वाली होती है और महारसीली मीठी वाणी से श्रोता को अमृत पान कराते हुए वे अजर-अमर कर देती है।

के के अलिया बासण होत हुतासण, तामैं खीर दूहीजूं।

इस विशाल संसार में कुछ लोग कच्चे मटके की तरह होते हैं, उसमें दूध, पानी नहीं रूक सकता अर्थात् जिनका अंत:करण अभी मलीन है उनके उपर ज्ञान की बात असर नहीं करती किन्तु यही मटका जब अग्नि के संयोग से पक जाता है, तब उसमें दूध दूहा जा सकता है क्योंकि पकने के पश्चात् दूध ठहरने की योग्यता उस बर्तन में आ जाती है, ठीक उसी प्रकार से ही इस अमृतमय वाणी रूपी अग्नि का संयोग मूढ जनों के अंत:करण से होगा तब वे भी मलिनता को दूर करके ज्ञान रूपी अमृत को धारण कर सकेंगे, इसलिए कहा है- 'श्रोतव्य, मन्तव्य, निधिध्याषितव्य, दृष्टव्य' श्रवण, मनन, निधिध्यासन करने से परमात्मा का दर्शन होता है।

रसूवन गोरस घीय न लीयूं, न तहां दूध न पाणी।

दूध में से घृत निकाल लेने पर पीछे छाछ ही रह जाती है, न तो उसको आप दूध ही कह सकते और न ही उसे जल कह सकते। ठीक उसी प्रकार से ही मानव के अन्दर 'रसो वै स:' वह रसमय आत्म ज्योति है किन्तु उसका साक्षात्कार नहीं होता है तो मानव छाछ की तरह ही रसहीन है। न तो आप उसे अपने मूल स्वरूप स्वभाव में स्थित कह सकते क्योंकि वह तो स्वरूप को भूल चुका है और न ही उसे आप रस विहीन ही कह सकते क्योंकि उस आनन्द मय रस में तो वह ओत-प्रोत ही हैं। किन्तु वह रस उसे अब तक प्राप्त नहीं हुआ है, तो हम उसे गोरस ही कह सकते हैं।

गुरु ध्याईरे ज्ञानी तोड़त मोहा, अति खुरसाणी छीजत लोहा।

इसलिए ज्ञानी गुरु का ध्यान कर, वह तेरे मोह का बन्धन तोड़ देगा जिस प्रकार से खुरसाणी पत्थर कठोर लोहे के लगे हुए जंग रूपी मैल को काट देता है उसे शुद्ध पवित्र कर देता है ठीक उसी प्रकार से ही तुम्हारे जंग रूपी मोह को सत्गुरु ही काट सकते हैं।

पाणी छल तेरी खाल पखाला, सतगुरु तोड़े मन का साला।

हे मानव तेरा पंच भौतिक शरीर चमड़े की बनी हुई पखाल की तरह ही है। क्योंकि उस चमड़े की पखाल में भी पानी भरा जाता है तथा ऊंट के पीठ पर लाद करके जब ले जाते हैं तो वह छलकती है। ठीक उसी प्रकार से भी तुम्हारा शरीर भी पानी से भरा हुआ है चलने पर यह भी छलकता है। जिस प्रकार से पखाल में छोटा छेद हो जाता है तो सम्पूर्ण जल निकल जाता है। उसी प्रकार से तुम्हारा शरीर भी फूट जायेगा तो पांचों तत्व स्वकीय स्वरूप में विलीन हो जायेंगे, यह देह मृत हो जायेगी। आत्मा अपने कर्मानुसार अन्य शरीर में गमन करेगी। मानसिक दु:ख को सत्गुरु ही मिटा सकता है, तभी मानसिक दु:खों से सर्वदा निवृति हो जायेगी तो कायिक आदि दु:ख तो स्वत: ही निवृत हो जाएंगे।

सतगुरु है तो सहज पिछाणी,
कृष्ण चरित बिन काचै करवै रह्यो न रहसी पांणी।

हे पुरोहित! तुम्हारे सामने बैठा हुआ बालक यदि सत्गुरु है तो सहज ही में पहचान कर लेना। यहां पर सत्गुरु होने का बहुत बड़ा प्रमाण प्रस्तुत कर रहे हैं कि देख कृष्ण चरित के बिना कच्चे घड़े में न तो कभी जल ठहरा और न ही कभी भविष्य में ठहर सकेगा किन्तु कृष्ण चरित से तो असंभव भी संभव हो जाता है। कच्चे घड़े में जल ठहर जाना यह कृष्ण चरित ही है। इस प्रकार से पुरोहित के प्रति गुरु जांभोजी ने बाल्यावस्था में यह प्रथम शब्द, गुरु महिमा से युक्त उच्चारण किया।

❑ साभार-जंभसागर

प्रकृति और बिश्नोई पंथ

परमात्मा सदैव न्यायकारी है। वह अपने द्वारा रची गई सृष्टि में न्याय का शासन चाहता है। दुराचारी, अन्यायी, स्वार्थी, भ्रष्ट, चरित्रहीन, झूठे, अहंकारी, लोभी आदि दुर्गुणों वाले लोगों के लिए इस संसार में कोई जगह नहीं है। जब-जब ऐसे लोगों द्वारा सदाचारी और परस्पर प्रेम व भाईचारे से रहने वाले लोगों पर दुराचार बढ़ जाता है तो परमात्मा अपने ही अंश (आत्मा) को उचित शक्तियाँ प्रदान करके संसार में भेजता है। इसी संदर्भ में हम जानते हैं कि संसार में अवतारों और गुरुओं को परमात्मा द्वारा भेजा जाता रहा है। अवतारों की कड़ी में भगवान राम आये, उन्हें उस समय व्याप्त परिस्थितियों के अनुकूल शक्तियाँ प्रदान की गई थी। उनके काल में जनसाधारण सदाचारी और परस्पर प्रेमभाव से रहने वाले थे, दुराचारी लोगों को राक्षस कहा जाता था। भगवान राम ने ऋषियों-मुनियों के धार्मिक कार्यों में विघ्न पैदा करने वाले राक्षसों का नाश किया। उन्हें विशेष रूप से रावण के लिये भेजा गया था, जिसका उन्होंने वध किया। भगवान राम ने सब दुराचारियों को अस्त्र-शस्त्र धारण करके मिटाया। उन्होंने मानसिक शक्ति का कम-से-कम उपयोग किया। अवतारों की कड़ी में ही भगवान श्री कृष्ण आये। उन्होंने केवल कंस को नाश करने के लिये अस्त्र-शस्त्र उठाये। शेष सारा कार्य उन्होंने मानसिक शक्ति से किया। महाभारत युद्ध में उन्होंने कोई अस्त्र-शस्त्र नहीं उठाये और दुराचारियों का नाश केवल अपनी मानसिक शक्ति से किया। भगवान श्री कृष्ण को भगवान श्री राम से अधिक शक्तियाँ प्रदान करके भेजा गया था।

पन्द्रवीं शताब्दी में भगवान स्वयं गुरु जंभेश्वर के रूप में मारवाड़ में आए जहाँ गाँव-गाँव में कंस पैदा हो गये थे। ऐसे हालात में अस्त्र-शस्त्र का उपयोग सम्भव नहीं था, क्योंकि उससे अत्यधिक जनहानि होती। उन्हें अस्त्र-शस्त्र की आवश्यकता भी नहीं थी। इस सम्बन्ध में उन्होंने स्वयं कहा है:-

(1) ज्ञान खड़ग जका हाथे, कोण होयसी हमारा रिपूं।
(शब्द-52)

(2) मोरे छुरी न धारु लोहन सारु, न हथियारु।
सूरज को रिप बिहंडा नाहीं, तातैं कहा उठावत भारु।
(शब्द-3)

भगवान श्री जम्भेश्वर ने अपनी मानसिक शक्ति से न झुकने वालों को झुकाया और हक की रोजी के लिये प्रवृत किया:

(1) ऊंनथ नाथ कुपह का पोहमा आण्या, पोह का धुर पहुँचायो
जम्बू द्वीप ऐसो चर आयो, इसकन्दर चेतायो।
मान्यो शील हकीकत जाग्यो, हक की रोजी धायो।
(शब्द-29)

(2) श्री गढ़ आल मोत पुर पाटण भुय नागोरी,
म्हे ऊंडे नीरे अवतार लीयो।
अठगी ठंगण अदगी दागण,
अगजा गंजण ऊनथ नाथन अनू व निवावण।
(शब्द-67)

इस प्रकार हम पाते हैं कि भगवान श्री जम्भेश्वर पूर्णतया ईश्वरीय शक्तियों से सम्पन्न गुरु थे। वे अपनी इच्छा शक्ति द्वारा किसी भी मानव में आध्यात्मिक दशाएं प्रविष्ट करने की क्षमता रखते थे और दुष्ट से दुष्ट व्यक्ति को एक नजर में ही परिवर्तित कर देते थे। इतनी उच्च शक्तियों का धनी होते हुए भी उनमें कोई भी अभिमान और बड़प्पन की भावना नहीं थी। इनके आने से पूर्व मोक्ष केवल संन्यासियों और तपस्वियों का अधिकार माना जाता था। परन्तु उन्होंने एक साधारण गृहस्थी को मोक्ष का मार्ग बताया और वह भी इसी एक जन्म में। इस सम्बन्ध निम्नलिखित शब्दवाणी के शब्दों का अवलोकन किया जा सकता है:-

(1) निश्चै छेह पड़ैलो पालो, गोवलवास जु करणो।
गोवलवास कमायले जिवड़ा, सो सुरगापुर लहणा।
(शब्द-53)

(2) पोहकर प्राणी भरमे भूला,
भूल जे यों चीन्हों करतांरु।

जाय मरण बिगोवो चूकै,
रतनकाया ले पार पहुँचै तो आवागवण निवांरु।
(शब्द-33)

(3) को आचारी अचारे लेणा,
संजमें शीले सहज पतीना।
तिहिं अचारी नै चीन्हत कोण,
जाकी सहजै चूकै आवागवण।
(शब्द-54)

(4) बिसन-बिसन तू भण रे प्राणी, पैंके लाख ऊपाजूं।
रतन काया बैकुंठे बासो, तेरा जरा मरण भय भाजूं।
(शब्द-119)

उन्होंने स्वयं अपनी स्थिति का वर्णन इस प्रकार किया है 'म्हे आप गरीबी तन गूदड़ियो मेरा कारण क्रिया देखो। (शब्द-115)। उनमें तत्कालीन महामण्डलेश्वर, मठाधीश धर्माचार्यों के गुण माने जाने वाले घमण्ड, ठेकड़ी और डींगबाली बिल्कुल नहीं थी। उनमें कोई आडम्बर और भेंट इकट्ठा करने की कोई लोलुपता नहीं थी। वे अपने माता-पिता की इकलौती सन्तान थे और उनके देहावसान के बाद उन्होंने अपनी सारी पैतृक सम्पत्ति मानव कल्याण के लिये समर्पित कर दी थी। वे स्वयं 'समराथल' नामक टीले पर आकर रहने लगे थे, जहाँ पर सारी उम्र प्रकृति के एकदम निकट रहे और यहीं पर पंथ प्रवर्तन किया व 51 वर्ष तक मानव कल्याण की वाणी कही और अपने शिष्यों का मार्गदर्शन किया। यदा-कदा अपनी शिक्षाओं के प्रचार-प्रसार हेतु यात्राएं भी की और जहाँ-जहाँ ठहरते थे वहाँ साथरियों की स्थापना की। उनका जीवन एकदम सरल था और वे प्रकृति के एकदम नजदीक से नजदीक रहते थे, जो शब्द-वाणी के इस शब्द से स्पष्ट है:- 'हरी कंकहड़ी मंडप मेड़ी, जहाँ हमारा बासा।' (शब्द-73)।

सृष्टि रचना और प्रकृति के बारे में उनकी मान्यता 'कलश पूजा' मन्त्र से पूर्णतया स्पष्ट हो जाती है। समाज में 'कलश पूजा' का केवल एक ही कर्मकांड उन्होंने बताया था और समराथल पर वे स्वयं इसके उपरान्त अपने शिष्यों को पाहल ग्रहण करवाया करते थे।

कलश-पूजा मन्त्र में प्रकृति का रूप: एक नया मिट्टी का कलश छाने हुए जल से भरकर बालू रेत पर स्थापित किया जाता है। कलश में तांबे का सिक्का डालकर उसके मुंह को नये सूती कपड़े के टुकड़े से ढक देते हैं। तत्पश्चात् गुरु-वाणी के सस्वर पाठ के साथ हवन किया जाता है। इसके पश्चात् कलश पर समाज के वरिष्ठ व्यक्ति के दोनों हाथों की हथेली एक दूसरे के ऊपर सीधी रखते हुए रखवाई जाती है और थापन या पुरोहित द्वारा उस वरिष्ठ पुरुष से आदेश प्राप्त किया जाता है जो गुरु महाराज के आदेश से कलश पूजा प्रारम्भ करने के लिये कहता है। उसके उपरान्त कलश पूजा मन्त्र पढ़ा जाता है।

इस मन्त्र का मन्तव्य यही है कि सृष्टि रचना के सम्बन्ध में परमात्मा के मन में विचार उत्पन्न हुआ (अकल रूप मनसा उपराजी) कि मैं एक से अनेक होऊं। इस रचना के लिये पाँच तत्त्वों आकाश, वायु, तेज (अग्नि), जल और धरणी (पृथ्वी) की उत्पत्ति की गई (ता मा पाँच तत्त्व होय राजी। आकाश, वायु, तेज, जल, धरणी, तामा, सकल सृष्टि की करणी)। अब उस सामर्थ्यवान परमात्मा ने आगे जो किया उसका वर्णन सुनिये, पहले सात द्वीप और नौ खण्ड की रचना की (ता समरथ का सुणो विचार, सप्त द्वीप नव खण्ड प्रमाण)। पाँच तत्त्वों को मिलाकर एक अण्डाकार रचना की और उस अण्डाकार रचना के विकसित होने पर उसे धरती पर स्थापित किया (पाँच तत्त्व मिल इंड उपायो, विकस्यो इंड धरणी ठहरायो)। इस अण्डाकार रचना के बीच में जल उत्पन्न किया और उस जल में विष्णु रूप उत्पन्न किया जिसके साथ समस्त जीवात्माओं का आना सम्भव हुआ क्योंकि आत्मा ईश्वर का ही अंश है जो विष्णु रूप ईश्वर के साथ आई (इंडे मध्ये जल उपजायो, जल में विष्णु रुप उपन्नो)। इसके पश्चात् उस विष्णु रूप के गर्भाशय रूप नाभि कमल का विकास हुआ (ता विष्णु को नाथ कमल विकसाना)। उस गर्भाशय रूप नाभि कमल में जीवात्मा रूपी बीज ठहराया गया, जिससे ब्रह्म जी की उत्पति हुई (ता मा ब्रह्म बीज ठहरायो। ता ब्रह्म की उत्पति होई)। यही ब्रह्म उत्पति,

पालन और संहारकर्ता है (भानै घड़ै सवारै सोई)। इस मन्त्र से स्पष्ट हो जाता है कि सृष्टि स्थापना का ईश्वर का मन्तव्य एक से अनेक होना था जिसके लिये ईश्वर ने प्रत्येक प्राणी को 'काम' दिया इसीलिये इसे मैथुनी सृष्टि कहा जाता है। यही कारण है कि 'गुरू' ने गृहस्थ को महत्व दिया और समस्त उपदेश गृहस्थ को दिये।

कलश पूजा मन्त्र के उपरोक्त वर्णन से स्पष्ट हो जाता है कि :-

(1) कलश में जो जल होता है, उसमें समस्त आत्माओं का वास हो जाता है। इसलिये यह जल अत्यन्त ही पवित्र माना जाना चाहिये, क्योंकि यही जीवन प्रदाता है, समस्त जीवन का सार है और अस्तित्व का आधार है व सृष्टि उत्पति का आधार है। इसलिये इसे ग्रहण करने के अलावा बिखेरा नहीं जाना चाहिये।

(2) पुरुष और प्रकृति एक ही है (ता विष्णु को नाम कमल विकसानो) यानि ईश्वर ही प्रकृति है। इसलिये प्रकृति को जड़ कहना अनुचित है। प्रकृति जीवन शक्ति से भरपूर है और यह समस्त प्राणियों में आत्मा के द्वारा कार्यरत है। इसलिये भगवान जम्भेश्वर की मान्यता के अनुसार प्रकृति महत्त्वपूर्ण है और इसका ह्रास, इसका शोषण, इसके स्वाभाविक चक्र में अवरोध पैदा करना, ईश्वर के प्रति अपराध है।

प्रकृति प्रेम ही समाज का मुख्य आधार है:-

(1) गुरु की मान्यता: संसार में सर्वप्रथम एक ऐसे मानव समाज की स्थापना हुई जिसके लिये प्रकृति प्रेम ही प्रमुख कर्त्तव्य बताया गया। समस्त प्राणी-मानव, पशु-पक्षी, जीव-जन्तु वनस्पति प्रकृति के ही अंग है। आकाश, वायु, तेज, जल, धरणी पांचों तत्त्व जो इन प्राणियों के जीवन का आधार है ये भी प्रकृति के अंग है। इस सम्बन्ध में जम्भवाणी के निम्नलिखित शब्द दृष्टव्य है:

(1) सोम अमावस आदितवारी कांई काटी बन रायों। (शब्द-7)

(2) सूल चुभीजै करक दुहेली, तो है है जायो जीव न घाई। (शब्द-8)

(3) जीवां ऊपर जोर करीजै, अंतकाल होयसी भांरु। (शब्द-9)

(4) जां जां जीव न जोती, तां तां मोख न मुक्ती। (शब्द-20)

(5) रतन काया सोमंति लाभै,
पार गिरांये जीव तिरै पार गिरांये सनेही करणी। (शब्द-23)

(6) भोम भली कृषाण भी भला, बूठो है जहाँ बहिये।
करषण करो सनेही खेती, तिसिवा साख निपाइये। (शब्द-30)

(7) जीव विणासै लौह कारणै,
लोभ सवारथ खायबा खाज अखाजूं। (शब्द-64)

(8) है है जायो जीव न घाई। (शब्द-85)

(9) घरू आगी इत गोवलवासो, कूड़ी आधोचारी।
सुकरत जीव सखायत होयसी, हेत फलै संसारी। (शब्द-86)

(10) और कूं जिभै कर आप कूं पोखणा,
जिंहि का कवा ले ही जैसी।
चंदे सूरे शीश नवंतो, विष्णु सूरां पोह पूछ लहन्तो। (शब्द-112)

(11) सुकरत साथ सगाई चालै,
स्वामी पवणा, पाणी नवण करंतो।
चंदे सूरे शीश नवंतो, विष्णु सूरां पोह पूछ लहन्तो। (शब्द-30)

जीव हत्या न करना, वृक्षों को न काटना आदि के बारे में निर्देश दिये हैं। इसके अलावा 29 धर्मों में से पानी छानना, ईंधन को झाड़ना, जीव दया पालनी, हरे वृक्ष काटना, थाट अमर रखना, बैल बधिया न कराना, मांस भक्षण न करना भी प्रकृति प्रेम से सम्बन्धित है।

2. अन्तिम संस्कार :

मृत शरीर को न जलाकर धरती में गाड़ना भी प्रकृति प्रेम से सम्बन्धित समाज का रिवाज है। इससे लकड़ी की आवश्यकता नहीं होती जो वनों को काटकर ही

लाई जाती है। मृत देह को तो क्योंकि पंच-तत्त्व में ही विलीन करना होता है जो धरती माता अपने आप विलीन कर देती है।

3. जोत :

प्रकृति प्रेम के कारण ही हवन में लकड़ी की समिधा का उपयोग नहीं किया जाता। गाय के उपलों के अंगारों पर ही हवन करते हैं। खोपरे का उपयोग अधिकतर समिधा के रुप में किया जाता है। खोपरे का तेल भी हालाँकि जलने पर वायु प्रदूषण करता है परन्तु ऐसा बतलाया गया है कि आजकल नारियल में से ही तेल निकाल लिया जाता है और नाममात्र का ही तेल बचता है। हवन में घी को जलाने के लिये माध्यम की आवश्यकता होती है, इसलिये इसका उपयोग किया जा सकता है। परन्तु कम से कम किया जाना चाहिये। साबुत नारियल गोटे का प्रयोग नहीं किया जाना चाहिये क्योंकि उसमें तेल की मात्रा बहुत होती है। दूसरे हम सौम्य अग्नि से ही प्रेम करते हैं, विकराल से नहीं, क्योंकि यह वनों को भी जला देती है। इसलिये हमारे हवन-कुंड छोटे होने चाहिए जिससे विकराल लपटें न निकलें। वे पक्षियों और अन्य उड़ने वाले जन्तुओं के लिये भी विनाशकारी हैं, इसलिये छोटे हवन कुंड काम में लिये जाने चाहिये? हम हवन-कुंडों की संख्या बढ़ा सकते हैं और जिस स्थान पर हमारे सामूहिक कार्यक्रम आयोजित होते हैं। जैसे कि मेला स्थल आदि वहां पर यज्ञ-शालाएं भी बनवा सकते हैं। हमें यह विशेष ध्यान रखना चाहिये कि हम हवन को जोत कहते है जो कि अग्नि का सौम्य रूप ही है। इस विषय में गुरु के निम्नलिखित शब्द अवलोकन करें:

(1) वासंदर क्यूं एक भणीजै, जिहिं कै पवन पिराणों।
आला सूका मेल्है नाहीं, जिहिं दिशि करै मुहाणों।
(शब्द-3)

(2) बसंदर नहीं नख हीरुं, धर्म पुरुष सिर जीवै पूरुं।

..... क्रमशः (आगामी अंक में)

❑ **हेतराम बैनीवाल,** बीकानेर

समाज का हित

गुरु जम्भेश्वर भगवान ने वर्षों पहले जो नेक कार्य किया लोगों को बिश्नोई बनाया वो कार्य एक तरह से रुक गया वही थम गया। किसी सन्त महापुरुष ने ये कार्य नहीं किया की लोगों को अपनी जाति में शामिल करो या उन्हें बिश्नोई बनाये या कैसे बनाये। मेरा समाज के लोगों से ये निवेदन है की जगह-2 गुरु जम्भेश्वर अनाथाश्रम बनाये जाये और उस आश्रम में जो बच्चे रहे उनकी पढ़ाई लिखाई के साथ-साथ उनको बिश्नोई पद्धति सिखाई जाये वो आगे आकर बिश्नोई बनेंगे तथा वो भी बिश्नोई धर्म का प्रचार प्रसार करेंगे तथा उसमें अगर कोई सन्त बनता है तो वो और भी अच्छा कार्य समाज के हित में करेगा। पढ़े-लिखे सन्त समाज को नई दिशा नया मार्ग अच्छी तरह दिखा सकते है व अपने बिश्नोई समाज के ग्रन्थों जम्भवाणी, शब्दवाणी, धार्मिक ग्रन्थ व हवन का ज्ञान सही तरीके से बतायेगें जैसे जम्भ सागर में कितना खजाना छिपा है। ये हर व्यक्ति नहीं जानता सागर की गहराई नाप सकते हैं। लेकिन जम्भ सागर की नहीं, ज्ञान, धर्म, पर्यावरण सेहत का खजाना। सभी धर्मों से ऊँचा बिश्नोई धर्म है। क्यों न हो जिस समाज के इतने महान गुरु हो जिन्होनें 29 नियमों का ज्ञान कराया जो मानो तो सभी समाज के हित के लिए है तथा मेरा समाज के कुछ लोगों से ये निवेदन है कि अब वो गुरु बनाते हैं। तो वो बिश्नोई समाज के ही हो जो तुम्हे तुम्हारे बिश्नोई धर्म से विमुख ना करे। अगर कोई आपको प्रेरित करता है तो उसकी बातों में ना आये बल्कि उसको अपने धर्म में जोड़ने का प्रयास करो अपने बिश्नोई ग्रन्थों के बारे में बताएं और उसे पढ़ने के लिए कहें।

❑ **साधना बिश्नोई**
मुरादाबाद

आइए अपनी पहचान बनाएं : 8

(लेखिका की इस लेखमाला के पहले सात भाग जनवरी से जून व सितम्बर, 2011 के अंकों में प्रकाशित हो चुके हैं।)

बिश्नोइज्म अपनी समस्त विशेषताओं तथा महानता के बावजूद भी संभवत: विश्व का इकलौता सम्प्रदाय है जिसके नाम में भ्रम की स्थिति का समावेश है। संसार में प्रत्येक वस्तु एक विशेष नाम से जानी जाती है। भ्रम तथा असमंजस की स्थिति तब उत्पन्न हो जाती है जब एक ही वस्तु के एकाधिक नाम अस्तित्व में हो। तथापि विभिन्न वस्तुएं विभिन्न भाषाओं में विभिन्न नामों से संबोधित की जाती है। वैश्विक मंचों पर इस प्रकार उत्पन्न होने वाली जटिलताओं से बचने के लिए जीवन जन्तुओं, पेड़-पौधों तथा यहां तक कि रसायनों के नामकरण का एकरूप तथा अंतर्राष्ट्रीय रूप से स्वीकृत तंत्र अस्तित्व में है। किन्तु दुर्लभ अपवादों को यदि छोड़ दिया जाए तो धर्मों के नामों की विशेषता यह है कि वे भाषाओं में परिवर्तन के साथ-साथ परिवर्तित नहीं होते हैं। एक धर्म विशेष भाषा तथा स्थान से अप्रभावित रहते हुए एक ही नाम से जाना जाता है। किन्तु खेदजनक रूप से एक नाम का सिद्धान्त बिश्नोइज्म पर चरितार्थ नहीं होता है।

बिश्नोई अथवा विश्नोई

BISHNOI ###VISHNOI

कुछ का मानना है कि 'बिश्नोई' सही है क्योंकि हमारे पास 20+9 सिद्धान्त अनुसरण करने के लिए है। इनका मत है कि बिश्नोई शब्द की उत्पत्ति 20+9 के संयुक्त उच्चारण से हुई है। अन्यों का मानना है कि विश्नोई सही तथा इनका यह भी मानना है कि बिश्नोई सही नहीं है। इनका तर्क यह है कि बिश्नोइज्म में भगवान विष्णु को एकमात्र भगवान माना गया है तथा भगवान विष्णु के नाम वैष्णव होते हुए यह शब्द 'विष्णोई' बना जो कालांतर में 'विश्नोई' बन गया। डा. हीरालाल माहेश्वरी (जाम्भोजी, विष्णोई सम्प्रदाय और साहित्य, भाग-1 पृष्ठ संख्या 437) मानते हैं कि बीस और नौ के आधार पर सम्प्रदाय का नामकरण बताना सम्प्रदाय प्रवर्तक और बिश्नोइयों के भी, संख्या ज्ञान की अज्ञता को संकेतिक करना भी हो सकता है, जो असंगत है। तात्पर्य यह है कि यह बात संभव प्रतीत नहीं होती कि पुरातन बिश्नोई 20 से आगे की गिनती नहीं जानते थे तथा यह अविश्वसनीय ही लगता है कि उन्होंने बीस से आगे की गिनती 20+1, 20+2, 20+3..... के रूप में की। इसलिए 'विष्णु' से ही 'विश्नोई' शब्द की उत्पत्ति मानी जानी चाहिए। वे कुछ अन्य तर्क भी इस क्रम में प्रस्तुत करते हैं। डा. माहेश्वरी का तर्क यद्यपि शक्तिशाली है किन्तु यह बिश्नोई व विश्नोई की पहेली को सुलझाने के लिए पर्याप्त नहीं माना जा सकता। 'बिश्नोई' शब्द का अत्यधिक प्रचलन में होना हमें इस शब्द के उद्भव के बारे में जानने के लिए बाध्य करता है। हम केवल मात्र यह कहकर इति नहीं कर सकते की संख्या सूचक बिश्नोई गलत है तथा विष्णु सूचक विश्नोई सही है। यह पूर्वाग्रह अथवा दूसरे शब्दों में बिश्नोई शब्द के प्रति दुराग्रह ही कहलाएगा। प्रचलन में बिश्नोई है, हमें यह भूलना नहीं चाहिए।

क्या 'विश्नोई' शब्द ही 'बिश्नोई' का स्रोत नहीं हो सकता? हमारे देश के कई क्षेत्रों में 'व' को 'ब' उच्चारित किया जाता है। क्या हमारे घरों में आज भी 'विकास' को 'बिकास' तथा 'विनोद' को 'बिनोद' नहीं पुकारा जाता है। यदि 'विष्णु' से वैष्णव व 'विष्णोई' होते हुए 'विश्नोई' बन सकता है तो क्या 'विश्नोई' से 'बिश्नोई' बनना असंभव बात मानी जाएगी? यदि इस संभावना को सत्य माना जाए तो 'बिश्नोई' शब्द की 20+9 अर्थात् संख्यात्मक उत्पत्ति की धारणा का भी उन्मूलन हो जाता है। संख्यात्मक समानता केवलमात्र एक संयोग भी मानी जा सकती है।

क्या हमारे सम्प्रदाय के नाम में स्थित विविधता इसको किसी प्रकार से हानि पहुंचा रही है अथवा भविष्य में पहुंचा सकती है। हां, यह बिश्नोइज्म की एकात्मक छवि का ह्रास कर रही है तथा भविष्य में बिश्नोई सम्प्रदाय के नाम की वर्तनी एवं उच्चारण के आधार पर दो भागों

में विभक्त होने की संभावना को भी जन्म देती है। इस प्रकार से यह ना केवल ह्रास तथा विभक्तिकरण की प्रक्रिया आरम्भ कर रही है वरन् उसे बल भी प्रदान कर रही है। क्रमिक विकास के लिए क्रम में इसी प्रकार की प्रक्रियाओं के कारण स्वरूप ही धर्म सम्प्रदायों में तथा सम्प्रदाय सहायक सम्प्रदायों में विभक्त हो जाते हैं।

बिश्नोइज्म में 'व' अथवा 'ब' के प्रयोग में मतभेद कब उभरा व इसके क्या कारण थे यह अनुसंधान का विषय हो सकता है। हमारे सम्प्रदाय के नाम पर मत यद्यपि विभाजित है किन्तु यह स्पष्ट तथा एकतरफा रूप से 'बिश्नोई' की ओर झुका हुआ है। बिश्नोई समाज के अधिकतम लोग 'बिश्नोई' प्रयोग करते हैं 'विश्नोई' नहीं। विभिन्न सोशल नेटवर्किंग वेबसाईट्स' इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। इन्हीं में से एक वेबसाइट पर किसी ने पोस्ट किया- 'सभी बिश्नोइयों/विश्नोइयों को नवण-प्रणाम।' यह ठेस पहुंचाता है। क्या हम वर्तनी के आधार पर विभाजित हो चुके हैं? यहां तक कि कई लोग तो अपने नाम के साथ 'बिश्नोई/विश्नोई' दोनों लिखने लगे हैं।

आधुनिक तथा युवा बिश्नोइयों को 'V' अधिक 'ग्लैमरस' प्रतीत हो सकता है। 'विश्नोई' बोलते समय निकलने वाली 'V' की ध्वनि उन्हें अधिक अच्छी लग सकती है। संभवत: यह उनकी आधुनिकता को भी बढ़ा सकती है। अन्य बिश्नोइयों से स्वयं को पृथक करने एवं दिखाने के क्रम में भी वे 'B' की अपेक्षा 'V' का प्रयोग कर सकते हैं। अलग दिखने तथा अलग करने की हमारे देश में होड़ लगी हुई है। प्रवाह के साथ जाना अपमानजनक, ढर्रा अथवा नीरस लग सकता है। प्रवाह के साथ बहने का आनन्द व लाभ हमें समझना होगा तथा प्रवाह 'बिश्नोई' है 'विश्नोई' नहीं।

हमें यह बात भी समझनी होगी कि हम अपने सम्प्रदाय के नाम को प्रयोगकर्ता की सुविधा अथवा पसंद के उपर नहीं छोड़ सकते हैं। इसकी मानक, एकरूप, एकार्थी तथा एकमात्र वर्तनी होना अत्यावश्यक है। अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा को इस अत्यंत गंभीर तथा संवेदनशील मुद्दे पर तीव्रता से हस्तक्षेप करना चाहिए। महासभा एक अनुसंधान परियोजना का सृजन कर सकती है जिसके उद्देश्य इस शब्द की उत्पत्ति तथा विकास के इतिहास को स्पष्ट करना हो सकते हैं। यदि किसी अनुसंधान से तथ्योद्घाटन की संभावना कम प्रतीत होती है तो दोनों में से एक वर्तनी को अपनाया जाना चाहिए तथा दूसरी का प्रयोग प्रतिबन्धित किया जाना चाहिए।

मानव इतिहास में अनेकों बार बहुमत ने तर्क को गौण किया है तथा स्पष्ट रूप से बहुमत 'बिश्नोई' के पक्ष में है। 'बिश्नोई' को 'विश्नोई' शब्द का ही अधिक विकसित रूप मानते हुए महासभा आधिकारिक रूप से 'बिश्नोई' 'BISHNOI' वर्तनी को जारी कर सकती है। निश्चित रूप से हम बिश्नोइयों की 29 नियमों में अगाध श्रद्धा है तथा संख्या 29 को पवित्र तथा बिश्नोइज्म की सूचक माने जाने का भी यही कारण है। 29 की संख्या को पवित्र मानना किसी भी प्रकार से अतार्किक नहीं है। 'बिश्नोई' शब्द तथा 20+9 की ध्वन्यात्मक समानता को एक सुखद संयोग के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए। यह संख्या निश्चित रूप से पवित्र है तथा हमारे सम्प्रदाय के नाम के साथ इसकी समानता होना सौभाग्य की बात है क्योंकि वर्तमान समय में यह संख्या हमारे सम्प्रदाय की पहचान का प्रबल भाग बनी हुई है। इस संयोग को एक सकारात्मक तथा शक्तिशाली बिन्दु के रूप में विकसित किया जा सकता है। मेरा सभी बिश्नोइयों से विनम्र निवेदन है कि कृपया बिश्नोई को अपनाएं ताकि कल कोई हमसे यह ना पूछे कि आप बिश्नोई हैं या विश्नोई?

क्षय हमें रोकना है, दृढ़िकरण हमें लाना है।
आइए एकरूप बनें, आइए बिश्नोई बनें॥

❑ संतोष पूनियां
II-बी, वंदना अपार्टमैंट, सदाबहार चौक,
नामकुम, राँची, झारखण्ड
07870392017
www.letshaveanidentity.blogspot.com
santoshpunia@myself.com

जीवन एक कला है

मनुष्य स्वयं ही अपने जीवन का कलाकार है। वही उपकरण भी है। वह अपने को जैसा बनाता है वैसा ही हो जाता है। मनुष्य कभी बना बनाया पैदा नहीं होता। जन्म से अनघड़ पैदा होता है, अपने को श्रेष्ठ बनाने के लिए उसको विद्या का सहारा लेना पड़ता है।

विद्या ही परम तीर्थ है। जिसके माध्यम से संसार के सारे दुखों से तर जाता है। जो तार दे वही तीर्थ है, अर्थात् विद्या का अर्थ है यथार्थ ज्ञान जैसा समझना जैसा बोलना वैसा ही लिखना समानता का व्यवहार करने का ही नाम विद्या है। विद्या का पहला चरण है- अध्ययन काल, जहां विद्या परिपक्व होती है। दूसरा है मनन काल और तीसरा है प्रवचन काल। पहले चरण की विद्या पाठशाला में पढ़ाई जाती है। दूसरे चरण की विद्या जिसको मनन काल कहते है वह सद्गुरु के सान्निध्य में दीक्षा के रूप में प्राप्त की जाती है। तीसरी विद्या यथार्थ विद्या होती है जो सत्य असत्य का निर्णय लेने में सक्षम होती है। नदियों व तीर्थों में स्नान करने से तो शरीर की शुद्धि तो होती है किन्तु पापों को धोने की व्यवस्था जल में नहीं है। पापों को धोने की व्यवस्था सद्गुरु की संगती से एवं स्वयं के आचरण सुधारने से होती है। शिक्षा के दो भेद है- एक है शब्द मय शिक्षा दूसरी है शब्द ज्ञान के द्वारा हमारा आचरण वैसा बन जाये। जो हमारी आत्मा का अंग बन जाये और हमें सुयश की ओर ले जाये। विद्या के अभाव में गुरु और शिष्य दोनों का ही जन्म बेकार है। इसके विषय में एक कवित्त नीचे दिया जा रहा है :-

जाका गुरु है आंधरा और चेला निरा निरंध।
अंधे से अंधा ठेलिया दोनों कूप मांहि पड़न्त॥
माटी सबको खाय गई रावण रहा न राम।
बाकी उनके रह गये दूषित भूषित काम॥
दुर्लभ मानुष का जन्म है देह न बारंबार।
तरुवर जूं पत्ता झरे बहुरी लागे वार॥

सृष्टि के रचयिता की तिजोरी का सर्वोपरी उपहार मानव है। परमात्मा ने बड़ी कृपा करके। बड़े प्रेम से यह मानव तन दिया है और उस मानव को सही रूप में मानव बनाने के लिए उस ईश्वर ने महती कृपा करके संतों को दूत के रूप में अपनी शक्ति देकर पृथ्वी पर भेजा और उन संतों को यह आदेश दिया कि यह मानव ब्रह्म की साक्षात् प्रतिमा है। आप लोग पृथ्वी पर जाकर अपने ज्ञान रूपी अमृत से इनका अभिषेक करें और इस सृष्टी के श्रृंगार में हम राही बनें। परंतु इस संसार में आकर संत एवं गृहस्थ दोनों ही माया के चक्कर में पड़कर अपने कर्तव्य को भूल गये और उल्टी गंगा बहाने लगे। इन दोनों का कर्त्तव्य था कि सृष्टि की रचना के रचनाकार का सम्मान करें और धर्म का आचरण करें। ईश्वर को माने और ईश्वर के आदेश को भी माने। मनुष्य के अंदर जब आसुरी प्रवृत्ति पनपने लगती है तो उसका विनाश संभव है। पत्थर जब अग्नि की अत्यधिक गर्मी से तपने पर कई टुकड़ों में चटक कर बिखर जाता है। इसी प्रकार जब पाप अधिक बढ़ जाता है तो कई प्रकार से विनाश का कारण बनता है। मनुष्य के व्यवहार में अंतर आता है तथा आत्मा एक दूसरे से दूर हो जाती है। परमपिता परमात्मा ने मनुष्य को एक इकरारनामा शपथ के रूप में स्वयं ने दिया है और दूसरा इकरार मनुष्य से लिया हैं।

गुरु जांभो जी की सब्दवाणी में सब्द नं. 83 में भगवान जम्भेश्वर ने कहा है कि 'जीव तड़े को रिजक न मेटुं मुआ परहत सारूं।'

इसका अर्थ है कि हे मानव तेरे पूर्व जन्म के संचित पुण्यों की धन संपत्ति एवं वैभव जो भी तुझे प्राप्त

हुआ है उसका तू तेरे जीते जी स्वतंत्र रूप से उपयोग कर मैं उसको तुझसे नहीं छीनूंगा किंतु एक बात का निश्चित ध्यान रख कि सूर्योदय एवं सूर्यास्त के समय संधी बेला में अपने द्वारा किए गये अच्छे एवं बुरे कर्मों का स्मरण निश्चित करना तेरे मरणोपरांत तेरे कर्मों का हिसाब निश्चित मांगूंगा। जैसे तेरे कर्म होंगे, उसी प्रकार दूसरी योनी में तुझे जन्म दूंगा। इसलिए तू चाहे संसार के प्राणी का भय न माने तो कोई बात नहीं किंतु मेरा ध्यान जरूर रखना। जम्भवाणी के शब्द नं. 115 में कहा गया है कि 'पवणा रूप फिरे परमेश्वर' मैं हमेशा सर्वत्र घूमता रहता हूँ और प्रत्येक मनुष्य के कर्म को देखा करता हूँ, मुझसे छिपकर तुम कोई काम नहीं कर सकोगे। सतगुणी व्यक्ति चाहे पैसे से कंगाल हो किंतु विद्वानों की सभा में वह धनवान माना जाता है। अष्टावक्रजी आठ जगह से टेढ़े थे जो राजा जनक की सभा में श्रेष्ठ माने गये। राजा जनक ने उनकी शिष्यता स्वीकार की। इसी प्रकार द्रोणाचार्य जब धृतराष्ट्र की सभा में गये तो उनके शरीर में पहनने के लिए पूर्ण वस्त्र भी नहीं थे, अपने गुणों के कारण वे कौरव एवं पाण्डवों के गुरु बने।

सारांश यही है कि- मनुष्य विद्या अवश्य प्राप्त करे, विद्यालय ही मनुष्य को मनुष्यता सिखाने का कारखाना है। आज अन्ध श्रद्धा विद्या के अभाव में देश में पनपी है, जो मंदिरों का निर्माण कर करोड़ों रुपयों का धन पाषाण मूर्तियों पर चढ़ाया जाता है। वहां पुजारी एवं पण्डे ठगी का काम करते हैं। यदि भारत के मंदिरों का सब धन इकट्ठा किया जाए तो एक राजा का राज्य खरीदा जा सकता है। धन के अभाव में कितने ही लोग भूख और प्यास से तड़प कर मौत के मुंह में समा जाते हैं। मनन‌शील लोग इस पर विचार करें।

❑ **श्रीराम सारन**
जे.पी. कॉलोनी, वार्ड नं 4, खातेगांव,
जिला देवास (म.प्र.)

भजन

हम में ओ३म्, तुम में ओ३म्, सब में ओ३म् समाया
सबसे कर लो प्यार जगत में कोई नहीं पराया
एक पिता के बच्चे हैं हम, एक हमारी माता
दाना पानी देने वाला, एक हमारा दाता
फिर न जाने क्यों मूर्ख बन, लड़ना हमको आया
सबसे कर लो प्यार जगत में, कोई नहीं पराया
हम में ओ३म्..... ॥1॥

ऊँच-नीच की, भेद-भाव की, दीवारों को तोड़ो,
बदला जमाना तुम भी, बदलो, बुरी आदतें छोड़ो
जागो और जगाओ सबको, समय सुहाना आया
सबसे कर लो प्यार जगत में, कोई नहीं पराया
हम में ओ३म्..... ॥2॥

जितने है संसार में प्राणी, सब में एक ही ज्योति
एक बाग के फूल है सारे एक माला के मोती
एक ही कारीगर सबका, एक माटी से बनाया
सबसे कर लो प्यार जगत में, कोई नहीं पराया
हम में ओ३म्..... ॥3॥

हर नारी को देवी समझो, सबकी लाज बचाओ
सब में सच्चा स्नेह जगाकर जग की शान बढ़ाओ
जो जम्भगुरू की शरण में आया, जिन का पथ पाया
सबसे कर लो प्यार जगत में, कोई नहीं पराया
हम में ओ३म्..... ॥4॥

सदाचार-सुसंस्कार

सकारात्मक चिंतन और सदाचार से व्यक्ति में आत्मबल का निर्माण होता है जो अपने साथ-2 दूसरों की प्रगति का मार्ग प्रशस्त करता है। यदि हम अन्यों के प्रति शुभ भावना शुभकामना के साथ अच्छा सोचेगें तो उनके साथ-2 अपना भी भला करेगें। सदाचार, सहनशीलता और सकारात्मक सोच से मन-मस्तिष्क शांत रहता है, तभी अच्छे-2 विचार मन में जाग्रत होते हैं। ऐसे चिंतन से प्राप्त ऊर्जा को रचनात्मक कार्यों में लगाने से सफलता निश्चित रूप से हमारे सन्निकट आती है जिससे मन शांत रहता है और सुख का अनुभव होता है। हमारा अन्त: करण एक विलक्षण तत्त्व है जिसमें हमारी सारी क्रियाएँ या मन में आने वाले चिन्तन जिन्हें हम समाप्त समझते हैं वे वास्तव में अमिट रूप से अंकित हो जाते हैं। हम जितनी बार जो क्रिया करते हैं या जिस भाव का चिंतन करते हैं वह उतना ही प्रगाढ़ रूप में अन्त:करण में अंकित हो जाता है। इन्हें ही हम संस्कार कहते हैं। ये दो स्तर पर अंकित होते हैं। प्रथम चेतन मन में द्वितीय अवचेतन मन में। जो चेतन मन में अंकित होते हैं उन्हें हम ऐच्छिक रूप से जानते हुए पुन: करते हैं और जो अवचेतन मन में अंकित होते हैं वे अनैच्छिक रूप से कभी जाग्रत अवस्था में तो कभी स्वप्न अवस्था में प्रकट हो जाते हैं।

अच्छे संस्कार हमसे नैतिक कार्य कराकर सुख देते हैं तथा बुरे संस्कार हमसे अनैतिक कार्य कराकर हमें दुख प्रदान करते हैं। अन्त:करण (आत्मा) शरीर का अति सूक्ष्म अविनाशी एवं चैतन्य मुख्य भाग है अत: इसमें अंकित ये संस्कार जैसे स्वप्न में प्रकट होते हैं वैसे ही सूक्ष्म शरीर के साथ-2 ये आगे के जन्मों में भी प्रकट होकर सुख-दुख देते रहते हैं। इस प्रकार संस्कार ही हमारे जीवन की उन्नति-अवनति, सुख-दुख, शांति-अशांति आदि के कारक हैं। अत: अन्त:करण की शुद्धि एवं मन में सदैव सुविचार एवं शुभ संकल्पो की उत्पत्ति हेतु यह आवश्यक है कि मन में आत्मा के सात्विक गुण जैसे प्रेम, आनन्द शान्ति, पवित्रता, सरलता, सहनशीलता, सहयोग, संतुष्टता, धैर्यता, नम्रता आदि स्थायी रूप में विद्यमान हो जायें।

सुख-शान्ति ही मनुष्य की मूलभूत आकांक्षा होती है। उसका सारा जीवन ही प्राय: इसी के प्रयत्न में व्यतीत होता है। अधिकांश व्यक्ति सुख-शांति की प्राप्ति के सच्चे उपाय जान नहीं पाते हैं। अज्ञानवश वे तत्कालिक सुखोपभोग की कामना से प्राय: दूसरों के हित का भी ध्यान नहीं रखते। कुछ मनुष्य सुख प्राप्ति स्वार्थपूर्ण दृष्टिकोण के द्वारा ही करते हैं, किन्तु इसमें कठिन समस्याएँ, विवाद और बुराइयाँ उठ खड़ी होती हैं। फलस्वरूप, मूलभूत आकांक्षा का पतन हो जाता है। सुख-शांति का आधार धर्म, सदाचार और सुसंस्कार है। पाप वृत्तियाँ और देवत्व, दोनो ही मनुष्य के अन्त:करण में निवास करती हैं। आसुरी शक्तियों में आकर्षण और तात्कालिक प्रलोभन का भाव अधिक होता है, इससे मनुष्य में बुराइयाँ जब स्वभाव में गहराई तक प्रवेश कर जाती हैं तो ये कुसंस्कार बन जाते हैं। कुसंस्कार ही मनुष्य को जन्म-जन्मान्तरों तक जन्म-मरण और सांसारिक दु:खों में आवृत्त किये रहते हैं। मनुष्य बार-2 पाप करता है और बार-2 दु:ख पाता है। उसके विचार, उसका विवेक, उसकी सद्बुद्धि अधर्माचार के कारागार में बंधी पड़ी रहती है और अनेकों प्रकार से दु:ख सहन करता हुआ भाग्य को दोष देता रहता है। विषयों में प्रवृत्ति के कारण ही प्राय: मनुष्य पाप कर्म करता है।

विषयों में प्रवृत्ति के वशीभूत न होने के लिए यह आवश्यक है कि मनुष्य अपने जीवन में माया रूपी

पांच महाशत्रु काम, क्रोध, अहंकार, मोह और लोभ को मन में न आने दे, तामसिक भोजन, मांस-मदिरा, सिगरेट तम्बाकू आदि का सेवन न करे तथा अन्य समस्त प्राणियों के प्रति मन में शुभ कामना, शुभ-भावना होनी चाहिए। अत: दु:खों से सदा के लिए मुक्ति पाने हेतु शुभ कर्मों से शरीर को, योग से मन को एवं आत्मज्ञान से बुद्धि को संस्कारित करना आवश्यक है। संस्कारित शरीर स्वस्थ होगा, मन प्रसन्न रहेगा एवं संस्कारित बुद्धि अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष एवं अभिनिवेश आदि क्लेशों से मुक्त करेगी तथा जीवन में स्वत: ही सुख-शान्ति का अनुभव होता रहेगा।

❑ **धर्मपाल सिंह**
से.नि.अधिशासी अभियंता
बिश्नोई सदन , 14/423 वसुंधरा
गाजियाबाद-201012

मुक्त करो इस वट वृक्ष को

जब पसरा था
मौन धरती पर
धर्म और राजसत्ता
के पहिये
धंस गए थे
वासना के कीचड़ में
उस वक्त आप ही तो
आए थे गुरु जम्भ!
इस जगत के
कल्याण करने का
व्रत लेकर,
आपने ही तो रोपे थे
मानवता के गुलाब।
जगत की करनी देख
आपकी आंखें करुणा से
भर आयी थी,
माँ हंसा कैसे
जान पाती कि
आप कौन हैं?
आप तो इस मरू के
'शिव' थे
आपके हृदय कुंभ से
एक अंकुर फूटा था
जिसे आपने
नाम दिया था-
'बिश्नोई'
वक्त पाकर ये
अंकुर पेड़ बना
जिसकी छाया में
लोगों ने अपने
सुख-दु:ख बांटे।
आपके महामौन
के बाद इस वृक्ष
पर डेरा डाल लिया
बुराइयों रूपी गिद्धों ने
अब इस पर नहीं
चहकती कोयलें, गोरैया
एक बार फिर से
जन्म लो जम्भ!
माँ हंसा की कोख
पुकार रही है
आओ और
मुक्त करो इस
वट वृक्ष को
बुराइयों रूपी गिद्धों से।

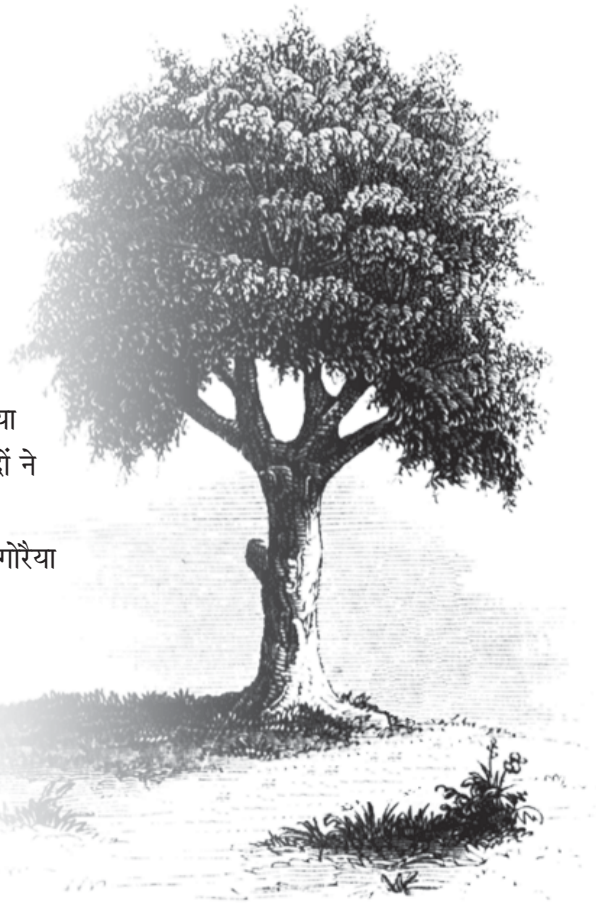

❑ **सुरेन्द्र सुन्दरम्**
व्याख्यता हिन्दी, लिखमीसर, पीलीबंगा, हनुमानगढ़

जम्भवाणी में विष्णु नाम की महत्ता

विष्णु शब्द विषलृ धातु से निष्पन्न होता है, जिसका अर्थ है-व्याप्त होना। अर्थात जो सम्पूर्ण सृष्टि में व्यापक है, जो सार्वकालिक, सार्वभौमिक सर्वत्र परमसत्ता का प्रतिनिधित्व करता है।

गुरु जम्भेश्वर जी ने वेदकालीन परम्परा के अनुसार ही विष्णु नाम स्मरण पद्धति को आगे बढाया है। विष्णु नाम का जप ही मनुष्य को इस भवसागर से पार उतार सकता है। विष्णु ही परमतत्त्व के रूप में प्राण शक्ति का आधार है। इस संसार में जब चारों और घोर अंधकार था। जब न सूर्य, चन्द्रमा, पवन, पानी, पृथ्वी, आकाश मण्डल, वनस्पति, पाताल, समुद्र कुछ भी नहीं था, उस समय भी एक केवल निरंजन स्वयं ही था।

विष्णु अनंत रूपों, सात पातालों, त्रिलोकों, चौदह भवनों तथा समस्त ब्रह्माण्ड में परिव्याप्त है। ऋग्वेद में विष्णु भगवान को अनेक नामों से पुकारा गया है वही अग्नि, मित्र, वरुण, इन्द्र शब्द वेद में कई बार आये हैं। निरूक्त के अनुसार इन्द्र शब्द वेद में कहीं इन्द्रियों के अधिपति मन या आत्मा के लिए कहीं सूर्य के लिए प्रयुक्त हुआ है। इसके अतिरिक्त इन्द्र व्यापक परमसत्ता के लिए प्रयुक्त हुआ है।

गुरु जम्भेश्वर जी की भांति भागवतों में भी स्वर्ग प्राप्ति के लिए विष्णु के जप को सर्वोच्च प्राथमिकता दी है। गुरु जम्भेश्वर जी ने जम्भवाणी में विष्णु नाम स्मरण को सबसे बड़ा जप माना है। यह भक्ति भावना का मूल मंत्र है।

" विष्णु विष्णु भण अजर जरीजै, यह जीवन का मूलूं "

गुरु जम्भेश्वर जी महाराज कहते हैं कि विष्णु नाम के स्मरण से काम, क्रोध, मोह, ममता को समूल रूप से नष्ट करना मनुष्य जीवन का मूल उद्देश्य है। महाभारत के तृतीय पर्व में भीम द्वारा विष्णु की जो स्तुति की गई है उसमें त्रयोदश पर्व के विष्णु सहस्त्र नाम में विष्णु की जो महत्ता तथा विशेषताओं का जो वर्णन हुआ है वे भी वैदिक विष्णु के गुणों से समानता रखते हैं। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार विष्णु या नारायण को क्षीर सागर का निवासी कहा जाता है। अवतारवाद की मान्यता के अनुसार एक ही विष्णु के दस अवतार माने जाते हैं। यह विष्णु विभिन्न युगों में परम सत्ता का प्रतीक बनकर अलग-अलग कालों में राक्षसी प्रवृत्ति के लोगों का विनाश करने तथा धर्म पुरुषों का उद्धार करने के लिए अवतरित होते हैं। गुरु जम्भेश्वर जी स्वयं विष्णु थे वे कहते हैं ये दसों अवतार मेरे ही रूप के हैं। उनके नाम इस प्रकार है:-

मत्स्य, कूर्म, वामन, नृसिंह, परशुराम, राम, कृष्ण, बुद्ध और कल्कि।

गुरु जम्भेश्वर जी ने जम्भवाणी में विष्णु नाम का जाप करने के साथ-साथ हवन करने की विधि भी बतलायी है। क्योंकि हवन से जो ज्योति प्रज्ज्वलित होती है उसमें स्वयं विष्णु भगवान के दर्शन होते हैं। इसलिए सम्पूर्ण जम्भवाणी परम्परा में गुरु जम्भेश्वर जी के दर्शन के लिए हवन की ज्योति को स्वीकार करते हैं। जम्भवाणी में गुरु जम्भेश्वर जी ने कहा है कि जो मनुष्य विष्णु जप का स्मरण नहीं करते उन्हें चौरासी लाख योनियों में जन्म लेकर अनेक कष्टों को भोगना पड़ता है। इसलिए सभी मनुष्यों को नित्य विष्णु मंत्र का जाप अवश्य करना चाहिए। विष्णु मंत्र का स्मरण करने में तनिक भी विलम्भ नहीं करना चाहिए क्योंकि धीरे-धीरे उम्र कम होती जा रही है इसलिए जल्द से जल्द सभी मनुष्यों को जीवन रहते हुए विष्णु का जाप आरम्भ कर देना चाहिए। क्योंकि नित्य प्रति विष्णु मंत्र का जाप करने पर दीर्घकाल में अनेक मंत्रों का जाप अत्यधिक पुण्य के रूप में फलीभूत हो जाता है?

विष्णु विष्णु तूं भण रे प्राणी, इस जीवन के हावै।
क्षण-क्षण आव घटंती जावै। मरण दिनों दिन आवै॥

विष्णु मंत्र का जाप, मुक्ति प्राप्ति, आत्मोपलब्धि तथा स्वर्ग प्राप्ति में भी सहायक एवं उपयोगी है। विष्णु नाम का जाप करने वाले व्यक्ति को इस जीवन में सुख और अलौकिक जीवन में मोक्ष की प्राप्ति होती है। विष्णु इस लौकिक जीवन में सभी प्राणियों का लेखा-जोखा लेने वाला है तथा अलौकिक जीवन को सुधारने वाला है। अंत में गुरु जम्भेश्वर जी कहते है कि यदि हम सबके शुभ कर्म या विष्णु जप नहीं किया तो इसमें विष्णु भगवान का कोई दोष नहीं है क्योंकि प्रत्येक मनुष्य को अपने कर्मों के अनुसार ही फल मिलता है।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि विष्णु नाम की महत्ता वैदिक युग से लेकर वर्तमान युग तक चली आ रही है। वेदों में भी विष्णु सूर्य का पर्यायवाची है तथा उपनिषदों में वह निर्गुण, निरंजन, निराकार, व्यक्त, अव्यक्त, रूप रंग से परे है और यह आदि, अनादि, सनातन, सार्वभौमिक, शाश्वत परमसत्ता का प्रतिनिधित्व करता है।

श्रीमती अंजु रानी
शोधार्थी, गुरु जम्भेयवर धर्मिक अध्ययन संस्थान
गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रोधैगिकी वि.वि., हिसार

जाम्भा गोरख गुरु अपारा

यहाँ पर जिस विचारणीय विषय का उल्लेख किया जाता है उसे सबको ध्यान में रखना है। 'लोग अनेक प्रकार से अर्थ करते हैं।' 'जाम्भा गोरख गुरु अपारा' इसके अर्थ में हमें देखना है कि प्रथम तो गोरख शब्द किसका वाचक है? ध्यान पूर्वक देखने पर पता चलता है कि गोरख शब्द किसी व्यक्ति विशेष का पर्याय नहीं है, क्योंकि 'शेष जंभराय आप अपरंपर अवल दीन से कहिये, जाम्भा गोरख गुरु अपारा, काजी मुल्ला पढ़िया पंडित निंदा करै गिवारा' इस शब्द की पंक्ति को देखने पर ऐसा लगता है कि यहां पर गुरु शब्द का कोई प्रसंग ही नहीं है। ऐसे ही मनोकल्पित अर्थ कर देना बुद्धिमानी का काम नहीं है। अनेक लोगों ने गोरखनाथ से जाम्भोजी को जोड़कर गुरु का प्रसंग बना दिया, जबकि यहाँ पर ऐसा कोई भाव नहीं दिखता। गोरख शब्द का शाब्दिक अर्थ विष्णु ही है। अर्थात् गोरख यानि विष्णु। 'थरपना थापी बालै निरंजन गोरखजती' यह गोरख विष्णु का ही वाचक है। 'तउवा जाग जू गोरख जाग्या, निरह निरंजन निरह निरालंब। जुग छतीसों एकै आसन बैठा बरत्यां। 'गोरख लो गोपाल लो, लाल ग्वाला लो। लाल लिलंग देवो। नवखण्ड पृथिवी प्रगटियो कोई बिरला जाणत म्हारी आद मूल का भेवो।'

शब्दवाणी के अनुसार गोरख शब्द विष्णु भगवान का ही पर्याय है। अत: 'जाम्भा गोरख गुरु अपारा' का सीधा सा अर्थ होता है। विष्णु अर्थात् जाम्भो जी ही गोरख है। यानि विष्णु है। नव अवतारों का उल्लेख करने के बाद शेष में जाम्भोजी स्वयं के बारे में वर्णन करते हुये कहते है कि शेष में मैं जाम्भा गोरख अर्थात् मैं स्वयं विष्णु हूँ, पर पढ़े लिखे लोग मेरी निंदा करते हैं, क्योंकि मेरी मौजूदगी में उनके पाखण्ड से जीवन चलाने में व्यवधान पड़ता है। इसलिए यह स्वाभाविक है कि पाखण्ड से जीवन चलाने वाले लोग महापुरुषों से जलते हैं। गो का अर्थ पृथ्वी, गाय और इन्द्रिय है। इनकी रक्षा करने वाला गोरख अर्थात् भगवान विष्णु। अत: 'जाम्भा गोरख गुरु अपारा' का सही अर्थ जाम्भोजी ही है और वही विष्णु है। गोरख कहो या विष्णु कोई फर्क नहीं पड़ता। अत: सब भाई-बहिनों से निवेदन है कि जाम्भो जी किसी गुरु के अधीन नहीं है वे स्वयं प्रकाश पुञ्ज दिव्य ज्योति स्वरूप व्यापक सता है। जाम्भो जी के विषय में कैसे लिखें वे तो एक चेतना के तत्त्व अर्थात् सागर की लहराने वाले सब के घट-घट में व्याप्त रहने वाले थे। उनको भी क्या गुरु की जरूरत पड़ेगी? नहीं ऐसा नहीं हो सकता क्योंकि वे गुरुओं के भी गुरु है। जितनी भी विश्व की चेतनाएं प्रकट हुई है। इन सब चेतनाओं में श्री जाम्भोजी की चेतना सर्वश्रेष्ठ व निराली है। जाम्भों जी की विचार धारा, उनकी सोच, उनकी दूर दृष्टिता, उनका दिव्य दृष्टिकोण, उनकी बहुभाषिता, दिव्य चिन्तन, जीवन मात्र के प्रति प्रेम, सहानुभूति, सौहार्द, आत्मियता आदि गुण जो जाम्भो जी में थे अन्यत्र दुर्लभ है। जाम्भो जी जैसा दिव्य पुरुष, 'भूतो न भविष्यति'।

उन्होंने कहा- 'म्हे सरी न बैठा। सीख न पूछी निरत सुरत सब जाणी।' आद-अनाद तो हम रचीलो। हमें सिरजिलो से कोण। लोई अलोई तिहं तृलोई। ऐसा न कोई जंपा भी सोई। जिहिं जपे आवागवण न होई। अनन्त जुगा में अमर भणिजूं। ना मेरे पिता ना माई। को अचारी अचारे लेणा। संजमें शीले सहज पतीना। तीहिं अचारी नै चीहनत कौण। जांकी सहजै चूकै आवागोण। ना मेरे माय ना मेरे बाप म्हे अपनी काया आप सवारी जुग छतिसो शून्य ही वरता सतजुग मांहि सिरजी सारी। ब्रह्म इन्द्र सकल जग थरप्या। दीन्ही करामात केती वारी। चन्द सूर दोय साक्षी थरप्या। पवन परमेश्वर पवन अधारी॥

ऐसे लक्षण धारी का क्या गुरु होगा। गुरु होता है तो कुछ गुरु ब्राह्मण होता है और जब जाम्भोजी की अवस्था यज्ञोपवित के योग्य हुई तब लोहट जी ने शुभ मुहूर्त में कुल गुरु ब्राह्मण को बुलाकर यज्ञोपवीत अर्थात् गुरुधारण करवाने लगे पर ब्राह्मण अनेक प्रयत्न करके भी जाम्भोजी के जनेऊ संस्कार नहीं कर सके। तब हार मान करके ब्राह्मण ने जाम्भो जी के चरण पकड़ लिये और गुरु बनने के विचार छोड़कर घर चले गये। अत: विचार करके देखने पर तो ऐसा ही लगता है कि जाम्भो जी जगत् गुरु है। उनके कोई गुरु नहीं है। अर्थात् जो सबका गुरु होता है। उनके गुरु कौन हो सकते है? अर्थात् कोई नहीं वे स्वयं सर्वेश्वर थे। उनसे कोई महान् हो ही नहीं सकता। सुरजन जी ने लिखा है-

जिण ओ जीव सिरजियो, सो सतगुरु सुरराय।
जुगां जुगां जीव जको, अवगती अलक न थाय।
मात पिता जाके नहीं, पख परवार न थाय।
जोति सरूपि जग मई सरवे रह्यो समाय।
अटल इडग इक जोति है, ना कही आव न जाव।
जन 'सुरजन' वां परसिया, म्हारी आवागवण न थाय।

❑ **स्वामी भागीरथदास शास्त्री**
श्री बालक राम आश्रम, मुकाम, बीकानेर

बधाई सन्देश

श्रीमती उषा बिश्नोई धर्मपत्नी श्री मांगीलाल बिश्नोई (बागड़िया) निवासी गांव सरदारपुरा लाडाणा, तह. सूरतगढ़, जिला श्रीगंगानगर ने **UDV#5343** के घोषित परिणाम में 37 वां स्थान प्राप्त कर राजस्थान प्रशासनिक सेवा में चयनित हुई। श्रीमती उषा वर्तमान में रा.उ.प्रा. विद्यालय, लालपुरा, सूरतगढ़ में अध्यापिका के पद पर कार्यरत हैं। आपकी इस विशिष्ट उपलब्धि पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार व बिश्नोई सभा, हिसार की ओर से हार्दिक बधाई।

राकेश सुपुत्र श्री साहबराम डेलू पौत्र श्री रामनरायण जी डेलू निवासी रावतसर (खैरपुर पंजाब) जिला हनुमानगढ़ (राज.) की बीएसएफ में Dy SP (ACP) के पद पर नियुक्ति हुई है। आपकी इस विशिष्ट उपलब्धि पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार व बिश्नोई सभा, हिसार की ओर से हार्दिक बधाई।

श्री राजेन्द्र प्रसाद पूनिया सुपुत्र श्री ख्यालीराम पूनिया, निवासी गांव कंवरपुरा, जिला गंगानगर (राज.) को हरियाणा सरकार द्वारा कनिष्ट अभियंता से उपमण्डल अभियन्ता के पद पर पदोन्नति कर हरियाणा शहरी विकास प्राधिकरण के हिसार सर्कल के सिरसा में नियुक्त किया गया है। श्री पूनियां एक उत्कृष्ट समाज सेवी भी हैं। आपकी इस उपलब्धि पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार व बिश्नोई सभा, हिसार की ओर से हार्दिक बधाई।

कुमारी कोमल बैनीवाल सुपुत्री डा. रविन्द्र कुमार बैनीवाल पौत्री स्व. श्री रामप्रताप जी बैनीवाल निवासी सीसवाल, जिला हिसार ने प्रीलिमीनरी मेडिकल टेस्ट (PMT) के माध्यम से एस.जी.टी. मेडिकल कॉलेज, बुढ़ेड़ा, जिला गुड़गांव में एम.बी.बी.एस. में प्रवेश प्राप्त किया है। आपकी इस उपलब्धि पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार व बिश्नोई सभा, हिसार की ओर से हार्दिक बधाई।

डा. अमित गोयल सुपुत्र श्री बाबूराम बिश्नोई निवासी ठाकुरद्वारा, जिला मुरादाबाद में हेडगेवार अस्पताल, दिल्ली में चिकित्सक के पद पर नियुक्त हुए हैं। आपकी इस उपलब्धि पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार व बिश्नोई सभा, हिसार की ओर से हार्दिक बधाई।

सुनील कुमार सुपुत्र कैप्टन प्रेम प्रकाश कालीराणा, निवासी जगाण, जिला हिसार को जुलाई, 2011 में न्यूजीलैण्ड में नेशनल इंस्टीट्यूट आफ स्टडीज में प्रवेश मिला है। न्यूजीलैण्ड के कॉलेज में चयन होने पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार व बिश्नोई सभा हिसार की ओर से हार्दिक बधाई।

अजय कुमार सुपुत्र श्री रामसिंह कालीराणा निवासी शिवनगर, जिला फतेहाबाद (गांव आर्यनगर, हिसार) का विश्व प्रसिद्ध Drug Research Institute (CDRI Lucknow) में Senior Research Fellowship (SRF) में चयन हुआ है। अब आप CDRI Lucknow में Medicinal & Process Chemistory में Ph.D. कर रहे हैं। आपकी इस विशिष्ट उपलब्धि पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार व बिश्नोई सभा, हिसार की ओर से हार्दिक बधाई।

सुभाष मांजू, मुख्याध्यापक रा.प्रा.पाठशाला, पीरांवाली को 'शिक्षक दिवस' पर जिज्ञासा मंच, हिसार की ओर से शिक्षा के क्षेत्र में आदर्श शिक्षक के रूप में उनकी उपलब्धियों व सेवाओं के लिए सम्मानित किया गया है। आपकी इस उपलब्धि पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार व बिश्नोई सभा, हिसार की ओर से हार्दिक बधाई।

श्रीरामकिशन बिश्नोई सुपुत्र श्री भागीराम बिश्नोई, गांव सारंगपुर, तह. आदमपुर, जिला हिसार की पदोन्नति सम्पादक गजेटियरज से संयुक्त राज्य सम्पादक, गजेटियरज, राजस्व एवं आपदा प्रबन्ध विभाग, हरियाणा में हुई है। आपकी इस उपलब्धि पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार व बिश्नोई सभा, हिसार की ओर से हार्दिक बधाई।

कुमारी नेहा बिश्नोई सुपुत्री श्री सुभाष चन्द्र जांगू निवासी 3709, सैक्टर 22-डी, चण्डीगढ़ की नियुक्ति जिला परियोजना अधिकारी (आपदा प्रबन्धन) के पद पर उपायुक्त कार्यालय जिला पानीपत में हुई है। आपकी इस उपलब्धि पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार व बिश्नोई सभा, हिसार की ओर से हार्दिक बधाई।

10वीं कक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले होनहार विद्यार्थी

सुरभि बिश्नोई 95.73(
सुपुत्री श्री राजेश कुमार
आजादनगर (भीलवाड़ा)

संजय कुमार 88(
सुपुत्र श्री महेन्द्र कुमार
गांव सदलपुर (आदमपुर)

अलका बिश्नोई 87(
सुपुत्री श्री जगदीशचन्द्र बिश्नोई
गांव फूलां (फतेहाबाद)

प्रकाश चन्द 83(
सुपुत्र श्री मलुराम बिश्नोई, गांव
नोखड़ा गोदारा, लौदी (जोधपुर)

गायत्री बिश्नोई 80(
सुपुत्री श्री जगदीश खिचड़
गांव बिशनपुरा, (फिरोजपुर)

12वीं कक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले होनहार विद्यार्थी

खुशबू रानी (81( )
सुपुत्री श्री मंगलचंद
गांव आदमपुर

सुनील बिश्नोई (83( )
सुपुत्र श्री रामेश्वर लाल सीगड़
गांव मण्डी डबवाली (सिरसा)

शालू (83.5( )
सुपुत्री श्री विनोद कुमार
गांव कालवास, हिसार

रितिका बिश्नोई (90.8( )
सुपुत्री श्री सलिन बिश्नोई
गांव धांगड़, जिला फतेहाबाद

सभी को उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए अमर ज्योति पत्रिका परिवार तथा बिश्नोई सभा हिसार की ओर से हार्दिक बधाई।

मुक्तिधाम मुकाम मेला : एक झलक

जांभाणी सांस्कृतिक परम्परा में विभिन्न स्थानों पर समय-समय पर लगने वाले मेलों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। ये मेले धार्मिक आस्था के साथ-साथ सामाजिक संगठन, आपसी मेल मिलाप व भाईचारे के प्रतीक हैं। सभी जांभाणी मेलों का सम्बन्ध किसी न किसी रूप में गुरु जंभेश्वर भगवान से अवश्य है। इन मेलों में समाधि स्थल मुक्तिधाम मुकाम में लगने वाले दो मेलों का सबसे अधिक महत्त्व है। वस्तुत: फाल्गुन व आसोज की अमावस्या को लगने वाले ये दो मेले बिश्नोइयों के महाकुंभ हैं। गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी 27 सितम्बर 2011 आसौज बदी अमावस्या, वार मंगलवार को मुक्तिधाम मुकाम में विशाल मेले का आयोजन हुआ जिसमें देश के कोने-कोने से पहुंचे सभी श्रद्धालुओं ने गुरु जंभेश्वर भगवान के चरणों में श्रद्धासुमन अर्पित किये। लगभग सप्ताहभर पहले से ही जांभाणी हरिकथा, भजन, कीर्तन आदि से मुकाम में न केवल चहल-पहल बढ़ गई अपितु पूर्ण वातावरण धार्मिक हो उठा। अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा भी सप्ताह भर पहले ही महासचिव श्री रामसिंह के दिशा निर्देश में मेले व्यवस्था में लगी हुई थी ताकि आने वाले श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की असुविधा न हो।

मेले में व्यवस्था की रीढ़ अखिल भारतीय गुरु जंभेश्वर सेवकदल के समर्पित सेवक भी 25 सितम्बर को ही मुकाम पहुंचने लगे। 26 सितम्बर को प्रात: तक देश के कोने-कोने से हजारों सेवक मुकाम पहुंच चुके थे और सायं 3 बजे सेवक दल ने मेला व्यवस्था को लेकर एक बैठक अध्यक्ष श्री सीताराम मांझू की अध्यक्षता में हुई। इस बैठक में महासभा के महासचिव श्रीरामसिंह पंवार ने मेला व्यवस्था का भार सेवक दल को सौंपते हुए महासभा के हरसंभव सहयोग का आश्वासन दिया। सेवक दल अध्यक्ष व अन्य वरिष्ठ सेवकों ने भी मेला व्यवस्था को लेकर बहुमूल्य विचार रखे व सभी सेवकों को समर्पित भाव से सेवा करने के लिए प्रेरित किया।

26 सितम्बर को ही सायं 5 बजे अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा की बैठक महासभा अध्यक्ष श्री मलखान सिंह बिश्नोई की अध्यक्षता में हुई जिसमें स्वामी रामानंद आचार्य, श्री रामनारायण बिश्नोई, श्री हीरालाल बिश्नोई, श्री लादूराम बिश्नोई सहित महासभा के सभी पदाधिकारियों व माननीय सदस्यों ने भाग लिया। बैठक में सर्वप्रथम 'बिश्नोई रत्न' चौ. भजनलाल जी, पूर्व मुख्यमंत्री हरियाणा, पूर्व विधायक श्री सुनील बिश्नोई व महासभा के सदस्य श्री सुन्दर लाल हापुड़ के आकस्मिक निधन पर शोक प्रकट किया गया। उपस्थित सभी महानुभावों ने चौ. भजनलाल जी के निधन को अपूर्णीय क्षति बताया तथा चौ. साहब द्वारा की गई समाज सेवा को अनुकरणीय, प्रशंसनीय व स्मरणीय मानते हुए यह प्रस्ताव पास किया कि महासभा चौ. भजनलाल जी के व्यक्तित्व व कृतित्व पर एक 'स्मृति ग्रंथ' प्रकाशित करेगी तथा उनकी स्मृति को चिरस्थायी बनाने के लिए उनके नाम पर कोई संस्थान बनाया जायेगा। इसके लिए श्री रामनारायण बिश्नोई की अध्यक्षता में ग्यारह सदस्य समिति भी गठित की गई।

26 सितम्बर की रात्रि अमावस्या की रात्रि थी। हर वर्ष की भांति इस रात्रि में भी मुकाम एवं संभराथल पर विशाल जागरण आयोजित किये गये जिसमें साधु, संतों, धर्माचार्यों व गायकों ने गुरु जंभेश्वर भगवान की शिक्षाओं पर प्रकाश डाला। 27 सितम्बर की रात्रि को भी मंदिर परिसर में जागरण का आयोजन हुआ।

27 सितम्बर को सूर्योदय के साथ ही मुकाम व संभराथल धोरे पर विशाल यज्ञ प्रारम्भ हुए। श्रद्धालुओं ने पंक्तिबद्ध होकर घी-खोपरे की आहुति देकर अपने को कृतार्थ किया। प्रात: 11 बजे अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा का खुला अधिवेशन प्रारम्भ हुआ। सर्वप्रथम महासभा के महासचिव श्री रामसिंह पंवार ने आए हुए सभी अतिथियों व श्रद्धालुओं का स्वागत किया तथा मेले के सफल आयोजन के लिए अखिल भारतीय गुरु जंभेश्वर सेवक दल, महासभा के सदस्यों व प्रशासनिक अधिकारियों का धन्यवाद किया तथा कामरेड

रामेश्वरदास डेलू व महासभा के प्रवक्ता श्री दर्शन सिंह एडवोकेट को मंच संचालन के लिए अधिकृत किया। खुले अधिवेशन की अध्यक्षता राजस्थान विधानसभा के पूर्व उपाध्यक्ष श्री रामनारायण बिश्नोई ने की। अधिवेशन को संबोधित करते हुए श्री उम्मेदाराम पूर्व आई.जी. ने कहा कि गुरु जंभेश्वर भगवान ने आत्मकल्याण का मार्ग दिखाया था, हमें उस पर चलना चाहिए तथा चौ. भजनलाल के व्यक्तित्व से हमें प्रेरणा लेनी चाहिए। श्री दर्शन सिंह एडवोकेट ने बताया कि गुड़गांव में समाज की धर्मशाला हेतु भूमि ली गई है जिस पर शीघ्र ही भवन बनाना है। श्री शिवकुमार कड़वासरा ने अपने संबोधन में कहा कि हम चौ. भजनलाल जी द्वारा अधूरे छोड़े गए कार्यों को पूरा करके उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि दे सकते हैं। श्री मांगीलाल बूड़िया ने कहा कि चौ. भजनलाल के व्यक्तित्व व कृतित्व को शब्दों में नहीं बांधा जा सकता है।

अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा के पूर्व अध्यक्ष चौ. कुलदीप सिंह बिश्नोई, विधायक आदमपुर हिसार लोकसभा के उपचुनाव में प्रत्याशी के रूप में व्यस्त होने के कारण लगभग एक बजे हवाई मार्ग से मुकाम पहुंचे। श्री कुलदीप बिश्नोई ने अपने संबोधन में कहा कि मैं गुरु महाराज से तथा आपसे आशीर्वाद लेने के लिए यहां आया हूं। उन्होंने कहा कि पूरे समाज ने हमारे परिवार को जो मान-सम्मान दिया है उसके लिए वे समाज के सदैव आभारी रहेंगे। उन्होंने समाज से अनुरोध किया कि आज मुझे समाज के सहयोग व मार्गदर्शन की आवश्यकता है। श्री बिश्नोई ने कहा कि आज चौ. भजनलाल जी की कमी पूरे समाज के साथ-साथ मुझे भी अनुभव हो रही है। उन्होंने समाज को आश्वासन दिया कि वे भी अपने पिताश्री के पदचिह्नों पर चलते हुए पूर्ण समर्पण भाव से समाज की सेवा करेंगे। चौ. कुलदीप बिश्नोई ने डॉ. कृष्णकुमार जौहर द्वारा लिखित 'बिश्नोई समाज और राजनीति' नामक पुस्तक का लोकार्पण भी किया। पूर्व अध्यक्ष श्री हीरालाल बिश्नोई ने कहा कि चौ. भजनलाल जी युगपुरुष थे समाज सदैव उनका ऋणी रहेगा। जनजागरण संस्थान के अध्यक्ष श्री लादूराम जी ने समाज सुधार पर बल देते हुए कहा कि चौ. भजनलाल जी ने समाज को एक दिशा व गति प्रदान की थी, उन्हें सदैव याद रखा जायेगा। पूर्व विधायक चौ. दूड़ाराम ने अपने संबोधन में कहा कि आज बिश्नोई समाज की विश्व में जो एक पहचान बनी है वह चौ. भजनलाल जी के कारण हैं। समाज में जितने प्रगति के कार्य हुए हैं वे चौ. साहब ने करवाए थे हमें उनके दिखाए मार्ग पर चलना चाहिए। श्रीमती सुनीता बिश्नोई जयपुर ने भी अपने संबोधन में चौ. भजनलाल जी के योगदान पर प्रकाश डाला। कामरेड रामेश्वर डेलू ने भारत सरकार से चौ. भजनलाल जी को 'भारत रत्न' की उपाधि देने की मांग की। खुले अधिवेशन के अध्यक्ष श्री रामनारायण बिश्नोई ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि चौ. भजनलाल जी ने बिश्नोई समाज को एक राजनीतिक धरातल प्रदान किया था, जिससे समाज की प्रगति में बहुत सहयोग मिला। अब हम सबको संगठित होकर कार्य करना चाहिए। स्वामी रामानंद जी आचार्य ने गुरु जांभो जी की शिक्षाओं पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए श्रद्धालुओं से बुराइयों को छोड़ने का आग्रह किया। श्री महीराम दिलोइया, श्री भागीरथ बैनीवाल, श्री जगराम गोदारा, श्रीरामपाल भवाद, श्री अरमान बिश्नोई, श्री बीरबल धानियां, श्री देवेन्द्र बिश्नोई A.S.P., मास्टर पब्बाराम, श्री हीरालाल भंवाल ने भी अधिवेशन में अपने विचार रखे। इस अवसर पर बिश्नोई सभा, हिसार के प्रधान श्री सुभाष देहडू व महासभा के वरिष्ठ उपप्रधान व फतेहाबाद सभा के प्रधान श्री ताराचन्द खिचड़, सचिव श्री मनोहरलाल गोदारा, श्री सुलतान जी धारणियां, श्री राजाराम धारणियां, सहदेव कालीराणा भी उपस्थित थे।

27 सितम्बर को ही प्रात: 9 बजे रामप्रकाश आश्रम संभराथल धोरा में स्वामी कृष्णानंद के सान्निध्य में 'जांभाणी साहित्य अकादमी' की स्थापना को लेकर एक बैठक हुई जिसमें अनेक साहित्य प्रेमियों ने भाग लिया। सभी साहित्य प्रेमियों ने स्वामी कृष्णानंद जी को अकादमी स्थापना के लिए अधिकृत किया।

अमर ज्योति, जंभ ज्योति व जंभादेश पत्रिकाओं के साथ-साथ जांभाणी साहित्य के स्टाल भी लगाए गए। पत्रिकाओं एवं साहित्य के प्रति श्रद्धालुओं में विशेष रूचि देखी गई।

त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

विषय- गुरु जांभो जी का वैश्विक चिंतन

विष्णोवतार गुरु जांभो जी पंद्रहवीं शताब्दी में अवतरित त्रिकालदर्शी महापुरुष थे। उनका दिव्य व्यक्तित्व व कृतित्व वैश्विक था। गुरु जांभो जी द्वारा प्रणीत 29 धर्म नियम व उच्चरित वाणी में वैश्विक चिंतन निहित है। 29 धर्म नियम जहां मानव मात्र के लिए उत्तम जीवन की आचार संहिता है, वहीं सबदवाणी में उन सभी वैश्विक समस्याओं का समाधान प्रस्तुत किया गया है जिनसे आज पूरा विश्व त्रस्त है। खेद का विषय है कि आज प्रचार-प्रसार के युग में भी गुरु जांभो जी के सिद्धांतों व वाणी का समुचित प्रचार-प्रसार नहीं हो रहा है। इस खटकने वाले अभाव की पूर्ति हेतु उपर्युक्त विषय पर त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है जिसमें देशभर के सुधी विद्वान विचार मंथन करेंगे। यह संगोष्ठी श्री बिश्नोई सेवा आश्रम, भीमगोडा, हरिद्वार में आयोजित की जाएगी। जिसका अनुमानित समय मार्च, 2012 है। निश्चित तिथि बाद में सूचित की जाएगी। इस संगोष्ठी के संभावित उपविषय इस प्रकार हैं-

1. गुरु जांभोजी का अलौकिक व्यक्तित्व, 2. 29 धर्म नियमों में वैश्विक चिंतन, 3. बिश्नोई पंथ: वैश्विकता का प्रतीक, 4. गुरु जांभोजी का पर्यावरण विषयक वैश्विक चिंतन, 5. विश्व दर्शन को गुरु जांभो जी की देन, 6. जंभवाणी में युगबोध, 7. जंभवाणी में लोकमंगल की भावना, 8. समन्वय के साधक गुरु जाम्भो जी, 9. गुरु जांभोजी का अहिंसा विषय वैश्विक चिंतन, 10. गुरु जांभो जी का अंतर्बाह्य शुद्धि विषय वैश्विक चिंतन, 11. जंभवाणी में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना, 12. वैश्वीकरण व बाजारवाद के दौर में गुरु जांभो जी के सिद्धान्तों का महत्त्व, 13. जंभवाणी: अपरंपर वाणी, 14. जंभवाणी: वैदिक परिप्रेक्ष्य में, 15. जंभवाणी: औपनिषदिक परिप्रेक्ष्य में, 16. जंभवाणी एवं श्रीमद्भगवद गीता, 17. नारी सशक्तिकरण के विषय में गुरु जांभो जी का वैश्विक चिंतन, 18. जंभवाणी एवं उसके प्रसंगों का ऐतिहासिक महत्त्व, 19. जंभवाणी में प्रतीक, 20. 29 धर्म नियमों एवं जंभवाणी की वार्त्तमानिक उपादेयता।

शोधपत्र भेजने वाले विद्वानों से अनुरोध है कि-

★ शोधपत्र 8 से 10 पृष्ठों (लगभग 2500 शब्दों का) का हो। ★ शोधपत्र पृष्ठ के एक ओर टंकित (टाईप) करके भेजें। ★ शोधपत्र की एक प्रति व सी.डी. निम्न पते पर भेजें- स्वामी कृष्णानंद आचार्य, बिश्नोई मन्दिर, नजदीक त्रिवेणी घाट, ऋषिकेश, जिला देहरादून, उत्तराखण्ड। ★ शोधपत्र के साथ आधा पृष्ठ का सार संक्षेप अवश्य भेजें। ★ हो सके तो शोधपत्र को ईमेल पर भी भेजें- email: skkbishnoi@rediffmail.com ★ केवल स्वीकृत शोधपत्रों के वाचन की ही अनुमति होगी, जिसकी सूचना पूर्व में भेजी जायेगी। ★ शोधपत्र वाचन के पश्चात परिचर्चा भी आयोजित की जायेगी। ★ सुझाए गये विषयों के अतिरिक्त भी किसी मिलते-जुलते विषय, उपविषय पर शोधपत्र लिखा जा सकता है। ★ आपका शोधपत्र 31-12-2011 तक निर्धारित पते पर पहुंच जाना चाहिए। ★ संगोष्ठी को अधिकाधिक स्तरीय बनाने के लिए आपके सुझाव आमन्त्रित हैं।

संयोजक :
स्वामी राजेन्द्रानंद महाराज
श्री बिश्नोई सेवा आश्रम, हरिद्वार

अध्यक्ष :
महामहोपाध्याय प्रोफेसर वेदप्रकाश बिश्नोई
पूर्व उपकुलपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार।

पुस्तक परिचय

पुस्तक – श्री जांभोजी और जंभवाणी मीमांसा लेखक : डॉ. हीरालाल माहेश्वरी
प्रकाशक – श्री गुरु जंभेश्वर साहित्य सभा, अबोहर (पंजाब)

संपूर्ण हिन्दी साहित्य में भक्तिपरक साहित्य अपना उल्लेखनीय स्थान रखता है क्योंकि इसमें जीवन का सार है। भक्तिकाल हिन्दी साहित्य का स्वर्णयुग माना जाता है जो पूर्णत: संगत है। भक्तिकालीन साहित्य और युग में बिश्नोई पंथ और साहित्य अपना गौरवशाली स्थान रखते हैं। विष्णु अवतार गुरु जांभोजी इस पंथ के प्रवर्तक थे और उनकी वाणी जांभाणी साहित्य का बीज है। इस पंथ में अनेक उच्चकोटि के साहित्य साधक हुए हैं जिनका साहित्य गुण एवं परिमाण की दृष्टि से सूर कबीर, तुलसी, मीरा के समकक्ष ठहरता है। जांभाणी संतों एवं गृहस्थियों ने इन महान जांभाणी कवियों के अमूल्य साहित्य को प्राणवत संभालकर रखा और हम तक पहुंचाया। यह कठोर सत्य है कि वर्तमान शिक्षा, संचार व विज्ञान के युग में हमने उन आदरणीय संतों और गृहस्थियों द्वारा संभालकर रखे गये साहित्य की घोर उपेक्षा की जिसका कुप्रभाव जांभाणी साहित्य पर पड़ा है जिसे हमें सदियों तक भोगना पड़ेगा। हिन्दी के विद्वानों व शोधार्थियों ने भी अनेक कारणों से इस साहित्य में अपनी रूचि नहीं दिखाई। सर्वप्रथम (1966 में) डा. राजकुमार सक्सेना ने बिश्नोई पंथ, गुरु जांभेजी और जांभाणी साहित्य को आधार बनाकर पीएच.डी. की। तत्पश्चात् डा. हीरालाल माहेश्वरी ने अपनी डी.लिट्. के माध्यम से इस कार्य को आगे बढ़ाया। यहां विवेच्य पुस्तक के लेखक भी डा. माहेश्वरी ही हैं।

'श्री जांभो जी और जंभवाणी मीमांसा' घोर परिश्रम और मनोयोग से लिखी गई पुस्तक है, जिसमें गुरु जांभो जी के जीवन, बिश्नोई पंथ, दर्शन और उनकी वाणी की गंभीर विवेचना की गई है। पुस्तक पर लेखक के विशद अध्ययन की छाप स्पष्ट दिखाई देती है। पुस्तक स्पष्ट रूप से दो भागों में विभक्त है। प्रथम भाग में अनेक छोटे-छोटे अध्यायों में विद्वान लेखक ने अनेक विषयों उपविषयों की विवेचना की है। दूसरा भाग जंभवाणी के संपादन व टीका से संबंधित है। प्रथम भाग में लघु-दीर्घ कुल मिलाकर उपसंहार सहित 25 अध्याय हैं। वस्तुत: ये पच्चीस अध्याय पच्चीस विषय हैं। जिनकी यहां पर गंभीर विवेचना है। विशेष रूप से जंभवाणी में चर्चित अनेक विषयों का प्रथम बार उद्घाटन इस ग्रंथ में हुआ है। जंभवाणी में सांकेतिक रूप में कही गई बातों का अनेक शास्त्रों से उदाहरण देकर विद्वान आलोचक ने स्पष्टीकरण दिया है जो स्तुत्य कार्य है। गत पचास वर्षों में डा. माहेश्वरी ने जांभाणी साहित्य में जो साधना की है वह ऋषिकल्प कार्य है। प्राचीन हस्तलिखित प्रतियों का पठन कितना दुष्कर कार्य है, यह तो कोई भुगतभोगी ही जान सकता है।

मरूभाषा का मर्मज्ञ ज्ञाता होना कोई एक दिन का कार्य नहीं है। विवेच्य पुस्तक में अनुसंधानकर्ता ने अनेकोंनेक ग्रंथों के जो उदाहरण दिए हैं उनको पढ़कर आश्चर्य होता है कि आपका अध्ययन कितना विशद है। जांभाणी साहित्य को सप्रमाण प्रकट करने का श्रेय विद्वान लेखक डा. हीरालाल माहेश्वरी को ही जाता है।

विवेच्य ग्रंथ 'श्री जांभेजी और जंभवाणी मीमांसा' पूरी परख के साथ लिखा गया है फिर भी इसमें कुछ खटकने वाली त्रुटियां-भ्रांतियां रह गयी हैं जिनकी चर्चा भी यहां अपेक्षित है। पुस्तक का शीर्षक ही खटकने वाला है। गुरु जंभेश्वर जी को मात्र 'श्री जांभोजी' लिखना जांभाणी परम्परा के अनुकूल नहीं है। गुरु जंभेश्वर जी के आगे जांभाणी जन 'गुरु' शब्द अनिवार्य रूप से लगाते हैं। बिश्नोई समाज से पांच दशकों का सम्बन्ध बताने वाले लेखक से यह भूल होना चिंतन का विषय है। परन्तु कुछ प्रगति है अपने पहले शोध प्रबंध में तो लेखक ने सीधा 'जांभोजी' ही लिखा था। इसी पुस्तक में गुरु जांभोजी के निर्वाण को देहान्त लिखना आभास करवाता है कि विद्वान लेखक की बुद्धि गुरु जांभोजी के अलौकिक व्यक्तित्व को ग्रहण नहीं कर पायी है।

'बिश्नोई पंथ' के नामकरण को लेकर भी अनुसंधानकर्ता ने तर्कों का दुरुपयोग किया है। यदि 'बिश्नोई' अशुद्ध है तो 'विष्णोई' महा अशुद्ध है क्योंकि विष्णु से वैष्णव बनना चाहिए। विष्णोई शब्द किसी शब्दकोश में नहीं मिलता, यह कुतर्कों की उपज है। लेखक स्वयं कहीं विष्णोई तो कहीं बिश्नोई प्रयुक्त कर रहा है जिससे सिद्ध होता है कि 'विष्णोई' नामकरण को लेकर लेखक का मस्तिष्क और आत्मा अलग-अलग राह पर हैं। 20 और 9 के आधार को हमारे पूर्वजों की गिनती विषयक अज्ञता बताई गई है। जिन्हें 20 से आगे गिनती नहीं आती थी तो उन्हें (20+9=29) जोड़ कैसे आ गया? लेखक एक और तो 'गुणतीस' की चर्चा कर रहे हैं दूसरी और नियमों को नामकरण का आधार ही नहीं मान रहे हैं।

गुरु जांभोजी के जन्मकाल को लेकर भी नया विवाद उत्पन्न किया गया है तथा अनेक कुतर्कों का सहारा लेकर सोमवार को शुभवार में बदला जा रहा है। ज्ञात ही है कि बिश्नोई पंचांग में वार सूर्योदय पर ही बदला जाता है। गुरु जांभोजी का जन्म सोमवार को ही आधी रात के बाद हुआ था, इसलिए तिथि तो आगे की जुड़ गई और वार सोमवार ही चला आया। परमानंद आदि कवियों की अज्ञानता सिद्ध करना प्रशंसनीय नहीं है। इसी प्रकार निर्वाण स्थल लालासर की अपेक्षा संभराथल ठहराना सरासर पूरे समाज को अज्ञानी व भ्रमित सिद्ध करता है जबकि जांभाणी साहित्य में स्पष्ट उल्लेख मिलता है कि गुरु जांभो जी ने लालासर में ही निर्वाण प्राप्त किया था। इसी कारण लालासर का महत्त्व है। 'बिश्नोई पंथ' की अपेक्षा 'बिश्नोई सम्प्रदाय' को उचित ठहराने के लिए भी तर्कों के साथ अनावश्यक खींचातान की है। लेखक द्वारा पूर्व में सम्प्रदाय शब्द का प्रयोग करने के कारण ही बिश्नोइयों को केन्द्र में आरक्षण नहीं मिला था। जांभाणी साहित्य में सर्वत्र पंथ शब्द का प्रयोग किया गया है।

मूल हस्तलिखित जांभाणी साहित्य में सबसे प्राचीन परमानन्द द्वारा संकलित 'पोथो ग्रंथ ज्ञान है' उसमें तथा अन्य सबद वाणी में तथा प्रचलित सबदवाणी में भी सभी जगह सबदों से पूर्व प्रसंग संदर्भ भी है किंतु माहेश्वरी जी ने इन प्रसंगों को व्यर्थ कह करके छोड़ दिया है। इन्हीं प्रसंगों से सबदों का अर्थ लग सकता है तथा ऐतिहासिक जानकारी सप्रमाण प्राप्त होती है। इन महत्वपूर्ण गद्य, पद्य दोनों में लिखित प्रसंगों को छोड़ना क्या बताता है? आप स्वयं ही समझें। मैं तो यह समझता हूं कि यह घोर अपराध हुआ है।

जम्भवाणी टीका में मुख बंध में लिखते हैं कि 'श्री जांभोजी के वैकुण्ठवास के पश्चात 300 सालों से भी अधिक समय तक ये सबद मौखिक परम्परा में ही चलते रहे।' जबकि स्पष्ट ज्ञात है कि गुरु जांभो जी के निर्वाण के 30-40 बाद ही वील्होजी ने उनको लिपिबद्ध कर दिया था उसके बाद अनेक बार लिपिबद्ध की गई।

जम्भवाणी तात्पर्य निर्णय में (पृष्ठ 230) तात्पर्य निर्णय अवश्य ही कीजिये। किन्तु मूल को बदलना कहां तक उचित है। यह कैसे बात है जो मूल के साथ छोड़खानी करके अपना निर्णय अपनी ही बुद्धि अनुसार अर्थ का अनर्थ करना हो सकता है। प्राचीन हस्तलिखित प्रतियों से वर्तमान प्रचलित प्रतियां मेल नहीं खा रही हैं। कहीं पर प्राचीन प्रतिलिपि ठीक भी हो सकती हैं किन्तु अपने ही अनुसार प्रतिलिपियों को चुनना किंतु आधार पर किया है। जबकि अधिकांश हस्तलिखित प्रतियां प्रचलित 'सबदवाणी' के अनुसार है।

पृष्ठ 26 पर लिखा है- 'जीवो के उद्धार की बड़ी चिंता थी' यहां चिन्ता शब्द जाम्भोजी के लिए उपयुक्त नहीं है, उद्धरण बारह काजै हरकत आई' यहां हरकत का अर्थ चिन्ता नहीं है। जाम्भोजी ही जब साधारण मानव की भांति चिंता करेंगे तो फिर क्या अंतर होगा?

गुरु जाम्भोजी ने 'नौ अवतार नमो नारायणा तेपण रूप हमारा थीयूं' का ऐसा कहते हुए बताया है कि नवां अवतार बुद्ध थे। किन्तु यहां पर मीमांसा लेखक कहते हैं कि इन अवतारों में बौद्ध धर्म के संस्थापक प्रसिद्ध गौतम बुद्ध की मान्यता नहीं है' इनके स्थान पर द्वापर के हुए बुद्ध अवतार की मान्यता है।

यहां पर जांभोजी ने शब्द कहा है वही प्रमाण मान्य होना चाहिए- 'बुद्ध रूप होय गयासुर मारयो, काकर मार दिया बैगाठी पंथ चलाया राह दिखायो नौ बर विजय हुई हमारी'।

गुरु जम्भेश्वर जी कहते हैं कि बुद्ध रूप धारण

करके मैं गया में रमा था, रहा था। यह प्रमाणित है तथा काफर यानि जो धर्म विरुद्ध आचरण करने वाले काफिर नास्तिक हो गये थे तथा 'मार' यानि कामदेव या अंगुलिमाल दैत्य विधर्मी को किया बेगारी। उन्हें पुन: संत पथ पर लाया। इसलिए पंथ चलायो मार्ग दिखाया। इस प्रकार से नौ बार विजय हमारी ही हुई है। इस शब्द से तो यही प्रतीत होता है कि जाम्भोजी बुद्ध रूप में जो शुद्धोधन के पुत्र थे ईस्वी पूर्व 448 में कलयुग में हुए थे, ही थे। द्वापर युग का प्रमाण नहीं है।

दूसरा प्रमाण- देहरादून के बौद्धों का विशाल मन्दिर बना हुआ है। उसमें अनेकों चित्र इतिहास रूप में चित्रित हैं। बाहर गुम्बद पर विशाल बुद्ध की मूर्ति अंकित है, उसके ठीक नीचे स्वर्णमयी एक मूर्ति भी चित्रित है। जब मैंने उस नीचे वाली स्वर्णमयी मूर्ति के बारे में जानकारी चाही तो बौद्ध संन्यासियों ने बतलाया कि यह नीचे वाली मूर्ति जाम्बो जी की है। जब उनसे आगे जाम्बो जी के बारे में जानकारी चाही तो उन्होंने इतना ही कहा कि भगवान बुद्ध ने कहा था कि भविष्य में मैं 'जाम्बोजी' के रूप में अवतार लूंगा। बस इतना ही है यह बुद्ध का भविष्य अवतार है यही हमारी मान्यता है।

इस बात से यह सिद्ध हो जाता है कि जाम्भो जी ने बुद्ध रूप में नौवां अवतार कहा है वह वही बुद्ध है जिन्होंने पंथ चलाया था। वर्तमान ने देश-विदेशों में बौद्ध धर्म प्रचलित है।

माहेश्वरी का बुद्ध कोई द्वापर का युग का अन्य बुद्ध होगा जिसका कोई प्रभाव नहीं है। यहां शब्दार्थ का सही ज्ञान न हाने से द्वापर युग के बुद्ध की कल्पना करना समाज में भ्रम पैदा करना ही है।

कृष्ण चरित्र- पृष्ठ 40 'चरित्र की गणना आचार के अंतर्गत है' आधार अपेक्षाकृत व्यापक 'चरित्र सीमित है'।

गुरु जम्भेश्वर जी ने शब्द ने 14 कृष्ण चरित्र तथा शब्द प्रथा में ही 'कृष्णचरित्र बिन काचे करवै रहयो न रहसी पाणी' शबद 15 में 'यह कृष्ण चरित्र परिबाणो' और भी अनेकों स्थानों पर कृष्ण चरित्र की बात कह करके जहां कुछ अनहोनी होनी हुई है वहीं पर कृष्ण चरित्र से हुआ है। ऐसा कुछ है जैसे- काचै करवै रहयो न रहसी पाणी, निबड़िये नारेल प होयवा, जाटा हुंतो पात करीनो यह कृष्ण चरित्र परिवाणो इत्यादि, किंतु इस दिव्य कृष्ण की अलौकिक शक्ति को आचरण आचार आदि कहकर सबद के महान अर्थ को अनर्थ कर डाला। गुरु जांभो जी की दैवीय शक्ति को नजरअंदाज करके माहेश्वरी जी जाने क्या संदेश देना चाहते हैं।

पृष्ठ 67 पर लिखा है 'खेती से पैदा किए हुए धन का 10वां हिस्सा दान में देना' तो क्या व्यापार आदि से पैदा किया हुआ धन नहीं देना है।

पृष्ठ 76- 'मूल बहंतै सोम अमावस....' में मूल का अर्थ समय नहीं है, मूल का अर्थ नक्षत्र होना चाहिए। यहां पर सोम अमावस 'आदित वारी, कांय काटी बण रायो' का अर्थ भ्रमित करने वाला है, किंतु होना चाहिए था कि सोम अर्थात् चन्द्रमा के रहते हुए यानि अमावस्या के रहते हुए और आदित्य सूर्य के रहते हुए यानि अमावस्या अंधकार में, चांदनी रात्रि में वन को क्यों काटा। अर्थात् सभी कालों में वृक्ष नहीं काटना चाहिए।

एकादशी के बारे में यहां पर भ्रमित व्याख्या है। जैसे कि निर्जल रहकर एकादशी करने का विधान है। ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष की एकादशी को निर्जला कहते हैं किंतु लेखक महोदय ने किसी पुराण का उदाहरण देकर यह लिखा है कि ग्रीष्म ऋतु के ज्येष्ठ के महीने में निर्जल रहना बड़ा कष्ट साध्य होता है इसलिए धर्म शास्त्रों में निर्जला एकादशी व्रत में फलाहार करने आदि की विशिष्ट व्यवस्था की गई है। यहां पर दोनों बातें लिखी हैं निर्जला तथा फलाहार यह कैसे संभव है?

पृष्ठ 89- तीस दिन सूतक के बारे में विद्वान लेखक लिखते हैं कि 'इस कारण व्यवहारिक दृष्टि से 30 दिन की सूतक अवधि को सोच विचार कर कम करने की जरूरत प्रतीत होती है।' गुरु जांभो जी के नियमों पर किंतु-परंतु करना बिश्नोई पंथ के मूलोच्छेदन का प्रयास है। इससे लेखक की गुरु जांभो जी में अश्रद्धा व अविश्वास का आभा होता है। यदि इस प्रकार एक-एक नियम पर सोच-विचार व परिवर्तन करने लग गये तो क्या होगा?

पृष्ठ 104- 'सतगुरु होई सहज पिछाणी' प्रथम पंक्ति का अर्थ सर्वथा प्रतिकूल है क्योंकि सबदों के अंदर

मनमुखी शब्द प्रवेश करवाकर अर्थ का अनर्थ किया है। प्रचलित में- 'सतगुरु हां तू सहज पिछाणी' ऐसा पाठ है जो प्रत्यक्ष सतगुरु को सामने बताने वाला है, इन्हें सहज में ही पहचान करले क्योंकि 'कृष्ण चरित्र बिन, काचै करवै रहयो न रहसी पाणी' बिना सतगुरु कृष्ण चरित्र में कच्चे घड़े में न तो कभी पानी ठहरा था और न ही कभी ठहरेगा। ऐसे सहज अर्थ को बदलकर 'शरीर में जीवात्मा के रूप में है उसको पहचान' यह सर्वथा गलत और जाम्भोजी का अपमान करने वाला है। सबदों के प्रसंग छोड़ देने के कारण ही ऐसा हुआ है।

पृष्ठ 108- 'काया पति नगरी मन पति राजा' इस शब्द का अर्थ भी भ्रमित करने वाला है।

चेतन रावल.... यहां पर भी अर्थ भ्रामक है। 'जहां की तो निरमली काया- 'निर्मली काया को शुद्धात्मा कहना। इससे बढ़कर अशुद्ध कुछ भी नहीं हो सकती। अब तक आत्मा अशुद्ध हुई नहीं है। काया शरीर तो अशुद्ध हो सकती है किंतु आत्मा अशुद्ध कैसी? आत्मा अशुद्ध नहीं है तो फिर शुद्ध होने का प्रश्न ही कहां उठता है।

'अहं ब्रह्मास्मि' जहां कहीं भी जाम्भोजी ने अपनी ईश्वरीय शक्ति विशेषता को शब्दों में कहा है वहीं पर ही महेश्वरी जी उसे उपनिषद् के एक मंत्र 'अहं ब्रह्मास्मि' कह करके पिछा छुड़ा लेते हैं। यह ब्रह्मास्मि तो एक अनुभूति है जो एक साधारण जन को ब्रह्मज्ञान होने से होती है। इसके द्वारा जाम्भोजी को एक साधारण संत की कोटि में रखने का प्रयास निंदनीय है। यह एक जगह ही नहीं अनेकों बार दोहराया है।

पृष्ठ 147- 'निजपो खोजि धियाइयै' यहां पर प्रचलित में निज पोह शब्द है। निज पोह का अर्थ है स्वकीय मार्ग पंथ खोजें, अपना स्वधर्म क्या है, अपनी निजता, योग्यता खोज करके ध्यान कीजिए। किंतु लेखक ने इस शब्द को बदलकर अनर्थ करने की कुचेष्टा की है। 'पुरुष भलो निजवाणी' का अर्थ भी अनर्थ है। यहां निजवाणी का अर्थ जाम्भोजी की अपनी स्वकीय वाणी है, किसी दूसरे की नकल नहीं है, यह ईश्वरीय वाणी है। किंतु लेखक को यह स्वीकार नहीं।

पृष्ठ 283- 'परशुराम के अरथि न मूवा' तथा 'परशुराम के हुकमी जे मूवा' यहां पर दो शब्दों में क्रमशः 7 और 58 में परशुराम का नाम आया है तथा शब्द 94 में अवतार वर्णन में भी नाम आया है। परन्तु तीनों जगहों पर ही परशुराम का कोई अर्थ नहीं दिया है बिल्कुल छुआ नहीं है।

पृष्ठ 457- 'गीतानाद कविता नाऊ, रंग फटारस टारूं' यहां पर इस महावाक्य का अर्थ करते समय गीता को कविता बताया है तथा श्रेष्ठ काव्य भी कहा है। यह सरासर गलत है कदापि मान्य नहीं है। गीता भगवान की नाद, अनहद ईश्वरीय वाणी है किसी कवि द्वारा रचित कल्पना प्रसूत वाणी नहीं है। ऐसा गीता का महत्त्व गुरु देव ने बतलाया है तो लेखक ने गीता की महता घटाते हुए कविता बना दिया है।

पृष्ठ 470- 'महमंद साथि..... यहां पर पैगम्बर मोहम्मद साहब से पूर्व उनके समान एक लाख अस्सी हजार पैगम्बर और सिद्ध या पीर पुरुष धरती पर आ चुके थे। यहां पर साथ का अर्थ समान या भांति पूर्व करके अनर्थ किया है। किंतु मुहम्मद के साथ ही एक लाख अस्सी हजार पैगम्बर पार पहुंचे थे, यह अर्थ होगा।

पृष्ठ 503- प्रचलित शब्दों में शब्द संख्या 26 में आया है कि 'विदगाराते उदगा गारूं' को माहेश्वरी जी नितांत गलत और अर्थहीन बता रहे हैं किंतु स्वसंग्रहित में वेद ग्रंथ उदगारू को ठीक बता रहे हैं, किंतु आप गौर करके देखें तो जो अर्थ वेदग्रंथ उदगारू का है वही अर्थ विदगा.... का भी है, वेद की जगह विद ज्ञाने धातु है' गाराते = ग्रंथ उदगा गारू = उदगार' बिल्कुल ठीक है। कैसे नितांत अर्थहीन और गलत है।

शब्द नं. 62- नामै करण किरिया- में अंतिम पंक्ति 'एक ज औगुण रामै कीयो' इसका अर्थ सर्वथा गलत है, यहां पर औगुण राम ने ही किये थे लक्ष्मण ने नहीं। राम ने औगुण कीये तो लक्ष्मण के शक्ति बाण लगने का दुख भी राम ने ही भोगा। लक्ष्मण ने नहीं क्योंकि वो मूर्छित थे।

शब्द नं. 63 में 'आतरि पातरि' का अर्थ ठीक से नहीं हुआ। मूल के विरुद्ध मालूम पड़ता है। यहां लक्ष्मण नाथ का प्रसंग भी बेतुका है। यह शब्दों के प्रसंग छोड़

देने के कारण अनर्थ हुआ है।

शब्द 87 में 'तउवा जाग जो गोरख....' यहां पर इस शब्द के गोरख की जो महानता गुरु जाम्भोजी ने बताई है उसको शब्दार्थ में प्रगट नहीं किया है। पीछे कलश पूजा में भी 'गोरख' के स्थान पर नारायण हरि करने की कोशिश की है। जाम्भोजी ने सहस्रनाम शब्द में गोरख को अपार गुरु, महिमावान तथा इस शब्द में निरह निरंजन निराले व छत्तीस युगों तक एक आसन पर बैठा बताया है। कैसे गोरख यति को नीचा दिखा सकते हैं।

शब्द 110- 'मथुरा नगर की राणी....' इस शब्द के भ्रमित अर्थ से एतिहासिकता को नष्ट करना सर्वथा आपत्तिजनक है। पूर्व प्रसंग में जाम्भोजी ने एक स्त्री के तीन जन्मों की बात बतलाई थी किंतु यहां पर जबरदस्ती शरीर पर ले जाकर जाम्भोजी की दिव्य दृष्टि का खण्डन ही किया है। जो तीन जन्मों की कथा थी उसे मात्र शरीर मथुरा नगरी काया कहकर के अपराध किया है जो गुरु जाम्भोजी के प्रति अश्रद्धाभाव का द्योतक है।

जम्भवाणी टीका एवं श्री जाम्भोजी जम्भवाणी मीमांसा में 'ओ३म् शब्द गुरु सुरति चेला.....' जो गुरु सुगरा मंत्र है। यह छोड़ दिया है। यह बहुत प्रसिद्ध सुगरा मंत्र है, सुगरा संस्कार करते हैं तो सुनाया जाता है।

प्रचलित सब्दवाणी और विवेच्य ग्रंथ में प्रस्तुत स्वरवाणी में एकरूपता नहीं है। प्रचलित शब्द वाणी पूर्णतया प्रचलित है प्रत्येक व्यक्ति के ये शब्द कण्ठस्थ हैं। अब यहां प्रकाशित सब्दों का क्या होगा। यह तो एक विवाद छेड़ दिया है कि कौन सा सत्य है और कौन सा असत्य है। आने वाली पीढ़ियां दोनों को ही नकार देगी तो क्या होगा। लोक सबसे बड़ा प्रमाण है परन्तु लेखक महोदय ने उसकी अपेक्षा की है, इसलिए उनका श्रम सार्थक नहीं हो।

इस ग्रंथ को पढ़ते हुए जो कुछ मैंने वही बिना किसी दुर्भावना व सद्भावना के यहां पर रखा है। मेरा मानना है कि यदि उपर्युक्त भ्रांतियां व त्रुटियां न होती तो यह ग्रंथ अवश्य है, संग्रहणीय व माननीय होता। फिर भी इसमें तो कोई संदेह नहीं कि लेखक महोदय ने अत्यन्त श्रम के साथ इस ग्रंथ को लिखा।

विवेच्य ग्रंथ का मूल्य 800/- आधुनिक महंगाई के युग में ठीक है परन्तु जिस प्रकार प्रकाशकों ने नि:स्वार्थ भाव से इसकी अग्रिम राशि एकत्रित की तथा मुखबंध से ज्ञान होता है कि इसके प्रकाशन में अन्य लोगों ने भी आर्थिक सहायता दी है। इतना सब देखते हुए इसका मूल्य अधिक है क्योंकि साहित्य सेवा समाज सेवा होती है, पेट पालने का धंधा नहीं।

भूल-चूक के लिए क्षमा प्रार्थना।

❑ **आचार्य कृष्णानन्द**
बिश्नोई मन्दिर, ऋषिकेश
मो. 09897390866

शोक सन्देश

श्रीमती दिलप्यारी धर्मपत्नी स्व. केसराराम जी धारणीया, निवासी गांव सकता खेड़ा, जिला सिरसा का 31 अगस्त, 2011 को 68 वर्ष की आयु में निधन हो गया। वे धार्मिक विचारों व जंभ नियमों को मानने वाली महिला थीं। ये अपने पीछे तीन लड़के, तीन लड़कियां, एक पौत्र सहित भरा पूरा परिवार छोड़कर गई हैं। अमर ज्योति पत्रिका परिवार जम्भेश्वर भगवान से प्रार्थना करता है कि दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करे।

अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा मुकाम (राजस्थान) के सचिव श्री सुन्दर लाल जी बिश्नोई (हापुड़, यूपी) का आकस्मिक निधन दिनांक 20 अप्रैल बुधवार 2011 सायं लगभग 6 बजे उनके हापुड़ स्थित निवास पर हो गया। उनके अचानक निधन से परिवार व समाज को ही नहीं अपितु समस्त बिश्नोई संगठन को संस्थाओं को कभी भी पूर्ति न होने वाला आघात पहुंचा। श्री सुन्दर लाल जी अनेक स्थानीय, प्रादेशिक व राष्ट्रीय स्तर पर संचालित होने वाली धार्मिक, सामाजिक एवं राजनैतिक गतिविधियों के केन्द्र बिन्दु थे।

विष्णु छत्तीसी

विष्णु छत्तीसी पढ़ो, बच्चों को पढ़ाओ।
धर्म व्याख्या धार कर जीवन में सुख पाओ॥

रूप गुण और स्वार्थ की प्रीत करे सब कोई।
प्रीत जिन की जानिए, या तीना बिन होये॥

दोष तीन कर दो अलग लालच, मतलब, दाम।
दो सतवादी दोनों मिले, दोस्ती उसका नाम॥

अब मैं तीन पढ़ाई गुरु महाराज ने समझाई वो लिखता हूं। अंक गणित, रेखा गणित और बीज गणित।

हमारे गुरु जम्भेश्वर भगवान में शब्द वाणी में सरल भाषा द्वारा शब्द संख्या पांच में बताया है। नौ अवतार नमो नारायण तेपन रूप हमारा धियूं। इसी कारण विद्या के अंक 9 हैं जो 10वां स्थान है वह 0 है। क्योंकि हमारी पृथ्वी पर 9 अंक माने जाते हैं। दसवां स्थान शून्य है क्योंकि हमारी पृथ्वी गोल है। इसलिए इसे अंक गणित माना है। इकाई जन्म देने पर भगवान ने पैदा की आगे जीवन साथी मिलने पर स्त्री-पुरुष का जोड़ा बना। 9×2=18 यह गिनती बनती है जिसके शब्द 18 और गीता के अध्याय भी 18 हैं। इस कारण संसार में गणित, हिसाब, नम्बर संख्या आदि का जोड़-तोड़ किया जाता है। यह हमारा अंक गणित है। अब हमारा दूसरा गणित है जो हिन्दी में स्वर ग्यारह हैं और एक अक्षर का रूप खुद होता है। जिसको बारहखड़ी नाम से जाना जाता है क्योंकि ब्रह्मा ने विद्या में राशि 12 ही बनाई हैं। ऊपर-नीचे, आगे-पीछे जहां भी रेखा लगती है। वहां अक्षर रूप बदल लेता है। इसलिए गुरु महाराज ने कहा था हवन करके विष्णु के चरणों की रज अपने मस्तिष्क चढ़ाकर तिलक लगा ताकि वह भगवान निरोगी काया व सद्बुद्धि देवे। इसलिए तिलक किया जाता है।

अब हमारा तीसरा गणित है- जो गुरु महाराज ने कान्हा जी के पुत्र उद्धरण जोधपुर राजा के पुत्र बीदा को सांसारिक वस्तुओं की नश्वरता का ज्ञान देते हुए तथा ईश्वर शक्ति की महिमा का वर्णन करते हुए, बात 36 युगों के वर्णन करने की कही थी। यह शब्द संख्या चार में कही थी। जिसका ब्यौरा पढ़ने पर भाई व अन्य कोई बंटा नहीं सकता। घुन या कीड़ा कोई खा नहीं सकता, चोर चुरा नहीं सकता। इस 36 युगों की कमाई को विद्या नाम जानकर विद्यालय में सिखते हैं। जिसको हम गुरुकुल में जाकर सिखें तो गुरुकुल और गुरु अगर शिष्य कुल में आकर सिखाएं तो स्कूल नाम से जाना जाता है। यहां हम विद्या का पाठ पहले सिखते हैं उसको पाठशाला नाम से जाना जाता है। अब मैं उन 36 युगों का वर्णन करता हूं जो निम्न प्रकार हैं-

अक्षर को क्रमगति मानकर पढ़ें ताकि 36 युग कौन से थे।

कः कर्म करते रहो सदा कुड, कपट तज मान।
कपट कमाई जो करे धन है धूल समान॥1॥

खः खर्च तुम धन का करो जरूरत पड़े तब आएं।
पर खर्च करे धन घटे दु:ख पाए॥2॥

गः गऊ धन तुम राखियो, सेवा कीजिए जान।
जीते जी सुख देवे मरने पर मोक्ष कल्यान॥3॥

घः घमण्ड है बहुत बुरा मत कर इंसान।
घमंड रावण का चला नहीं यही एक प्रमाण॥4॥

ङः माता-पिता की सेवा करो और गुरुजों से आदर सहित शिक्षा प्राप्त करो यह खाली समय है॥5॥

चः चरित्र धन है कीमती बेटी रख संजोए।
चरित्र गया सब गया घर में बचा न कोए॥6॥

छः छल-कपट तुम मत करो, करो न जीव का नास।
कपट व धोखा करे हो जाए सत्यानाश॥7॥

जः जीवन है बहुत कीमती जीव है ब्रह्मा समान।
जीवों की हत्या करो नहीं होगा कल्याण॥8॥

झः झगड़ा ना नीति से यदि जंग वैरी भी होए।
झगड़ो हक के वास्ते दोष न लागे कोए ॥9॥

ञः ईश्वर भगती में खाली समय गुजारना यह खाली समय है ॥10॥

टः टहलना सुबह का अच्छे स्वास्थ्य का राज।
स्वस्थ मन प्रसन्न रहे दिन भी कीजे काज ॥11॥

ठः ठहरना हमने यहां नहीं आगे पीछे देख।
स्थिर है करनी जीव की बना बनाया लेख ॥12॥

ड़ः डर भय मन में रखना कायर के सब काम।
हिम्मत की कीमत नहीं पूर्ण है अनुमान ॥13॥

ढ़ः ढको अवगुण दूजों के गुण को करो सचेत।
जो कोई बुरा कर्म करे कल अपने आप ही लेत ॥14॥

णः आत्मा और संतोष से बुजुर्गों की बातें व विद्वानों की कथा सुनें। यह खाली समय है ॥15॥

तः तस्करी तुम मत करो देश जनों के साथ।
भार उठाए बोझ मरे माल दूसरे खात ॥16॥

थः थारी-म्हारी मत करो इसमें झगड़े पनपे जात।
भाई से भाई लड़े जगत में होत हंसात ॥17॥

दः दान करे धन का घटे है इस यग में मान।
निर्धन, वृद्ध और बीमार की सेवा ही धर्म का काम ॥18॥

धः धर्म करते रहो सदा लेते रहो विष्णु का नाम।
सच्चे मन से नाम लेत ही प्रसन्न है भगवान ॥19॥

नः निर्मल मन रखो सदा क्रोध न आने पाये।
क्रोध आए पशु बने कही पाप हो जाए ॥20॥

पः प्रेम से रहना सदा, मानवता कादै नाम।
प्रेम से प्रसन्न विष्णु है जग में हो सब काम ॥21॥

फः फर्ज है इंसान का अपने कुल की रीति।
माता-पिता से बन्दगी समाज से हो प्रीति ॥22॥

बः बुराई जड़ है पाप की पाप मूल महानाश।
मानव को भ्रष्ट करे साथी है अनुराग ॥23॥

भः भ्रम तुम मत कीजिए अवगुण करिए आप।
दूजे को हम बुरा कहें चढ़े शीश पर पाप ॥24॥

मः माया-विष्णु आपकी बड़ी है अपरम्पार।
माया के मोह में भागे सब संसार ॥25॥

यः यह मेरी जम्भ देव से विनती सबको सद्बुद्धि दे।
सुख में दुनिया सारी बढ़े दुःख सबका हर ले ॥26॥

रः राम नाम रटते रहो हर सुबह और शाम।
कह कवि संसार में सच बोलना सार ॥27॥

लः लालच बुरी बला है तज सको तो ठीक लाग।
जीवन सुधारण वास्ते लोभ नींद से जाग ॥28॥

वः वहां है क्या देखा नहीं स्वर्ग-नर्क में जाए।
साथ चलेगा कर्म तेरा जो तू यहां कर जाए ॥29॥

शः शिक्षा पाओ प्रेम से ले लो गुरु से ज्ञान।
जो नर शिक्षा पा गये बने बड़े विद्वान ॥30॥

षः षठरस है संसार में चखना है दुस्वार।
माया के मोह में मीठा ना छोड़ा पार ॥31॥

सः साधक, सेवा, सम्पत्ति उंचे कुल की आय।
विद्या, भलाई और स्त्री भाग बिना ना पाए ॥32॥

हः हे ईश्वर तू महान है, महान तेरो संसार।
जीवों का कल्याण कर तू ही पालनहार ॥33॥

क्षः क्षत्रीय धर्म हर वीर का जिसको मातृभूमि से स्नेह।
प्राणों की परवाह नहीं की अमर है उनकी देह ॥34॥

त्रः त्राही-त्राही जग में मची अशांति का रोग।
भातृभाव की नहीं भावना यह कलयुग का योग ॥35॥

ज्ञः ज्ञान मिला जब पार्थ को महाभारत जीता जाए।
तलाश करो गुरु जम्भेश्वर की जो कर्त्तव्य बोध कराए ॥36॥

❑ **भूराराम भाम्भू**
पुत्र श्री जीराज बिश्नोई
गांव लखुआना, डा. मौजगढ़
त. मण्डी डबवाली, सिरसा
फोन : 01668-273577

समाचार विविधा

खेजड़ली शहीदी मेला : एक झलक

पेड़ों की रक्षार्थ अपने प्राण न्यौछावर करने वाले 363 शहीदों की स्मृति में भादवा सुदी दशमी को खेजड़ली गांव में आयोजित शहीदी मेले में देश भर से आए हजारों श्रद्धालुओं ने शहीदों को श्रद्धासुमन अर्पित किए। मेले में बच्चों से लेकर बुजुर्गों ने महायज्ञ में आहुति देकर पर्यावरण संरक्षण का संकल्प लिया। पूरा मेला परिसर अमृतादेवी बिश्नोई के 'सिर साठे रूंख रहे तो भी सस्तो जाण' के संदेश से गुंजायमान हो गया। इस मौके पर आयोजित धर्मसभा में बतौर मुख्य अतिथि मध्यप्रदेश के पशुपालन मंत्री श्री अजय बिश्नोई ने कहा कि खेजड़ली की माटी से आज पूरा विश्व अपने माथे पर तिल करना चाहता है। दुनिया पर्यावरण असंतुलन व प्रदूषण की समस्या से जूझ रही है। पूरे विश्व के वैज्ञानिक इससे निपटने के प्रयास कर रहे हैं। वहीं, मारवाड़ में बिश्नोई समाज के लोगों ने सदियों पूर्व पेड़ों को बचाने में अपने प्राण न्यौछावर कर दिए। विश्व में ऐसा बेमिसाल बलिदान और कहीं नहीं मिलता।

उन्होंने कहा कि पुरखों ने इतिहास रच दिया लेकिन आने वाली पीढियों के लिए हमें भी धरती को हरा-भरा बनाना है। शहीदों को सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि हम अपने जीवन में हर खुशी के मौके पर एक पौधा लगाने का संकल्प लें। तभी हमारा यहां आना सार्थक होगा। पूर्व सांसद जसवंत सिंह बिश्नोई ने कहा कि खेजड़ली में लोगों ने उस समय बलिदान दिया था, जिस समय न पढ़ाई थी और न ही पर्यावरण कानून। उन्होंने कहा कि धरती से जीव-जंतुओं की सैकड़ों प्रजातियां लुप्त हो गई हैं। यही हाल रहा तो आने वाले समय में मानव जीवन के लिए गंभीर संकट हो जाएगा। अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा के अध्यक्ष मलखान सिंह बिश्नोई ने कहा कि मेले का उद्देश्य तभी सार्थक होगा जब हम एक पौधा लगाएंगे। यही शहीदों को हमारी श्रद्धांजलि होगी। भाजपा के प्रदेश मंत्री पब्बाराम ढाका ने कहा कि पर्यावरण संतुलन रहेगा तभी मनुष्य का जीवन सुरक्षित होगा। उन्होंने गुरु जंभेश्वर के सिद्धांतों पर चलने का आह्वान करते हुए कहा कि नशे की प्रवृत्ति से दूर रहें। जिला परिषद सदस्य भागीरथ बेनीवाल ने खेजड़ली मेले पर राष्ट्रीय अवकाश व यहां पर्यावरण सम्मेलन आयोजित करने की आवश्यकता जताई।

वृक्ष मित्र साहब राम राहड़ ने कहा कि गुरु जंभेश्वर भगवान के नियमों की पालना में यहां सैकड़ों लोगों ने पेड़ों के लिए अपने शीश कटवा दिया। हमें भी सरकार की पर्यावरण विरोधी नीतियों का एकजुट होकर विरोध करना चाहिए। लूणी प्रधान तुलसीराम मेघवाल ने कहा कि खेजड़ली की धरा से धरती को बचाने का संदेश गया है। उन्होंने कहा कि बिश्नोई समाज की पर्यावरण संरक्षण की मुहिम विश्व में एक मिसाल है। स्वामी भागीरथ दास आचार्य (जाजीवाल धोरा) ने समाज में बढ़ती नशा प्रवृत्ति पर चिंता जताई।

धर्मसभा को पूर्व मॉनीटरिंग सलाहकार लादूराम बिश्नोई, रिटायर्ड आई.जी. उम्मेदाराम बिश्नोई, अखिल भारतीय जीव रक्षा बिश्नोई सभा के महासचिव मांगीलाल बूडियाने भी संबोधित किया। इस अवसर पर रामस्वरूप बूडिया, पूर्व पी. सी.सी. सदस्य परसराम बिश्नोई, बिश्नोई सभा अजमेर के अध्यक्ष नीरज बिश्नोई, बालोतरा के उपखंड अधिकारी ओ. पी. बिश्नोई, मंडोर ब्लॉक सी.एम.एच.ओ. डॉ. रामकिशोर बिश्नोई, समाज सेवी मालाराम बाबल, जोधपुर लोकसभा क्षेत्र युवा उपाध्यक्ष श्याम खीचड़, ठेकेदार ओ.पी. धायल, भाजपा देहात उपाध्यक्ष जगराम गोदारा, जोधपुर डेयरी के अध्यक्ष रामलाल बिश्नोई व सहायक अभियंता भागीरथ खावा, बिश्नोई सभा हिसार से श्री सुनील गोदारा, श्री सुधीर काकड़, महासभा के उपप्रधान श्री राजेन्द्र डेलू, गऊशाला मुकाम के अध्यक्ष श्री सुल्तान धारणियां, सेवकदल से श्री शिवकुमार कड़वासरा, श्री विनोद धारणियां, श्री अनूप गोदारा भी उपस्थित थे।

पौधरोपण व द्वार का किया शिलान्यास

मध्यप्रदेश के पशुपालन व ऊर्जा मंत्री अजय बिश्नोई ने महंत हीरानंद की स्मृति में द्वार का शिलान्यास किया। इसके बाद उन्होंने शहीद स्मारक की परिक्रमा की। यहां बिश्नोई के अलावा लूणी विधायक मलखानसिंह, पूर्व सांसद जसवंत सिंह व भाजपा प्रदेश मंत्री पब्बाराम ढाका ने शहीदों की स्मृति में पौधारोपण किया। मंत्री ने मेला परिसर में बन रहे गुरु जंभेश्वर महाराज के मंदिर का अवलोकन भी किया। इस अवसर पर वन विभाग के व अन्य कई प्रशासनिक अधिकारी मौजूद थे।

'अमर ज्योति' की ओर से स्टाल लगाई गई जहां चौ. भजनलाल स्मृति अंक के प्रति लोगों में विशेष रूचि देखी गई। अमर ज्योति की सदस्यमाला में नये मोती पिरोए गए।

घर में दो, बाहर बाइस

खेजड़ली शहीदों की स्मृति में राजस्थान सरकार एक निजी व एक संस्थागत अमृतादेवी बिश्नोई पर्यावरण पुरस्कार देती है। इसमें पुरस्कार स्वरूप 25 हजार रुपए दिए जाते हैं। वहीं, मध्यप्रदेश सरकार 22 लोगों को यह पुरस्कार दे रही है। प्रथम तीन पुरस्कारों के लिए क्रमशः दो लाख, एक लाख व पचास हजार रुपए दिए जाते हैं। मध्यप्रदेश के मंत्री अजय बिश्नोई ने कहा कि जब पंजाब और मध्यप्रदेश सरकार इतने पुरस्कार दे रही है तो राजस्थान सरकार को भी इनकी संख्या बढ़ानी चाहिए।

101 युवाओं ने किया रक्तदान

खेजड़ली शहीदी मेले में बिश्नोई टाइगर फोर्स की ओर से आयोजित रक्तदान शिविर में 101 युवाओं ने रक्तदान किया। शिविर में डॉ. रामकिशोर बिश्नोई व डॉ. पुष्पेंद्र जाणी ने सेवाएं दीं। वहीं, मेले में डॉ. शिवप्रताप जाणी व अन्य डॉक्टरों की ओर से नशामुक्ति शिविर का भी आयोजन किया गया।

प्रतिभाएं सम्मानित

चिंकारा पर शोध कार्य करने वाले डॉ. हेम सिंह गहलोत को अखिल भारतीय जीव रक्षा बिश्नोई सभा की ओर से पुरस्कृत किया गया। जीव रक्षा व शहीद स्मारक समिति अबोहर (पंजाब) की ओर से पर्यावरण प्रेमी खूम्मराम खीचड़, पत्रकार पूनमचंद कस्वां, पवन गौड़, रामजीवन मांजू, राजूराम भादू, लिखमाराम लोहमरोड, दौलाराम, महिपाल व गोविंद को सम्मानित किया गया।

जांबोलाव धाम पर माधा मेले में उमड़े श्रद्धालु

तीर्थ शिरोमणि जांबोलाव धाम पर भादवा की पूर्णिमा को आयोजित माधा मेले में हजारों की संख्या में श्रद्धालुओं ने पहुंचकर यज्ञ में आहुति दी और धोक लगाई। मेले की पूर्व संध्या पर संतों के सान्निध्य में जागरण हुआ। सुबह जांबा गांव में प्रभात फेरी निकाली गई। इसके बाद मुकाम पीठाधीश्वेर स्वामी रामानंदजी आचार्य, भागीरथदास जी शास्त्री मुकाम, स्वामी बालकृष्ण जांबा व अन्य संतों ने सबदवाणी का पाठ किया और पाहल बनाया। जैसे-जैसे दिन चढ़ता गया गांव-गांव से श्रद्धालुओं के आने का क्रम शुरू हुआ, जो दोहपर तक जारी रहा। दूर-दूर तक उठती यज्ञ की लौ और भक्तों के जयकारों से पूरा मेला परिसर धर्ममय नजर आ रहा था। दोपहर 12 बजे मेला परिसर में धर्मसभा आयोजित की गई। इसमें आचार्य रामानंदजी ने समाज को संगठित रखने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि चाहे समाज हो या परिवार। अनुशासन बहुत जरूरी है। स्कूल में बच्चा अनुशासनहीन हो जाता है तो परीक्षा परिणाम खराब आता है। इसी प्रकार समाज में भी अनुशासन एक व्यवस्था है। बच्चों से लेकर बड़ों तक को इस व्यवस्था का पालन करना चाहिए। उन्होंने समाज सुधार के लिए निकाली गई धर्मरथ यात्रा में लोगों द्वारा दिए गए सहयोग की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि लोगों ने इस दौरान हमारा सहयोग किया था लेकिन इसका फायदा उन्हें ही होगा। भागीरथदासी शास्त्री ने कहा कि श्री गुरु जंभेश्वर महाराज के बताए 29 नियमों का पालन करने से मनुष्य का जीवन आसानी से गुजरता है। उन्होंने महिलाओं से आह्वान किया कि वे बच्चों को बचपन से ही 29 नियमों के बारे में बताएं। भाजपा के प्रदेश मंत्री मास्टर पब्बाराम ढाका ने कहा कि आज पूरी दुनिया जांभोजी के 29 नियमों को अपना रही है। इसलिए जरूरी है कि हमारे समाज में थोड़ी बहुत इसमें देखी जा रही शिथिलता को दूर किया जाए। उन्होंने समाज के युवाओं से आह्वान किया कि वे चौ. भजनलाल जी के जीवन मूल्यों को अपने जीवन में धारण करें। उन्होंने कहा कि भजनलाल जी समाज के लिए सदैव आदर्श बने रहेंगे। सहदेव कालीराणा हिसार ने कहा कि आज वही समाज आगे बढ़ पा रहा है जो संगठित है। हमें सामाजिक स्तर पर एकता दिखानी होगी। अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा के महासचिव रामसिंह पंवार ने समाज में फैल रही नशा प्रवृति पर रोक लगाने के लिए सामूहिक कदम उठाने की आवश्यकता जताई। धर्मसभा को लादूराम बिश्नोई, जोधपुर डेयरी के पूर्व चेयरमैन मालाराम राव, कृषि मण्डी निदेशक किशनाराम उदाणी, रिटायर्ड डी.आई.जी. हनुमानसिंह, रिटायर्ड आई.जी. उम्मेदाराम, जिला परिषद सदस्य भागीरथ बेनीवाल, एडवोकेट सुखराम ढाका, अखिल भारतीय जीव रक्षा बिश्नोई सभा के महासचिव मांगीलाल बूडिया व पर्यावरण प्रेमी खम्मूराम खीचड़ सहित अन्य गणमान्य लोगों ने संबोधित किया। मेला कमेटी के अध्यक्ष हीराराम बिश्नोई ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

❑ **पूनमचन्द बिश्नोई**

सीनियर सब एडिटर, दैनिक भास्कर, जोधपुर

वील्होजी स्मृति मेला

श्री वील्होजी स्मृति मेला रामड़ावास में 14.4.11 को सुबह हवन किया गया व पाहल बनाया गया। इसमें महन्त

गोपालदास जी व वील्होजी मंदिर के पुजारी हनुमानदास ने सुबह से शाम तक श्रद्धालुओं को अमृत पाहल पिलाया तथा नशा मुक्त समाज बनाने का सभी लोगों ने संकल्प लिया। समाज में एकता और प्रेम भावना बढ़ाना व एकजुट होकर समाज आम गरीबी को समाप्त करने पर बल दिया। गांव के सभी लोगों ने बढ़चढ़ कर भाग लिया। इसमें हरिद्वार से आए हुए स्वामी राजेन्द्रानन्द जी ने तथा अनेक संतों ने वील्होजी की जीवनी पर प्रकाश डालकर समाज को नशा मुक्त बनाने पर अधिक बल दिया।

❑ **हनुमानदास बिश्नोई साधु**
पुजारी वील्होजी मंदिर, रामड़ावास कलां

खेजड़ली शहीदों का 281वां शहीदी दिवस मनाया

दिनांक 7.9.11 को वृक्षों के रक्षार्थ खेजड़ली शहीदों का शहीदी दिवस गांव गंगा, डबवाली, जिला सिरसा में गुरु जम्भेश्वर मन्दिर में मनाया गया और अमृता देवी बिश्नोई चौक का उद्घाटन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री संतलाल जी प्रोफेसर थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री हनुमान जी सीगड़ ने की व विशिष्ट अतिथि श्री सुरेन्द्र कुमार जी गोदारा, अध्यक्ष जीव रक्षा डबवाली ब्लॉक थे। रात्रि में जागरण भी हुआ जिसमें स्वामी भजनदास जी जाम्भा ने धर्म प्रचार किया। 7.9.11 को प्रात: हवन किया गया, पाहल बनाया गया। सभी ने मिलकर हवन में पूर्णाहुति दी तथा पाहल ग्रहण किया। उसके उपरान्त सभी वक्ताओं ने वीरांगना अमृता देवी बिश्नोई को कोटि-कोटि नमन किया और वृक्षों की रक्षा के लिए दी गई कुर्बानी को याद किया और कहा कि हमें भी उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए कि ज्यादा से ज्यादा वृक्ष लगाने चाहिए। पर्यावरण की रक्षा करनी चाहिए। इसी कार्यक्रम के चलते इंद्रजीत धारणीयां सचिव बिश्नोई सभा डबवाली की माता जी श्रीमती दिलप्यारी प्रभु चरणों में विराजमान होने पर सभी ने 2 मिनट का मौन रखा। इसी कार्यक्रम में बिश्नोई सभा गंगा अध्यक्ष रामजीलाल, सचिव औम प्रकाश तरड़, कोषाध्यक्ष गौतम जी ने शहीदी दिवस के मौके पर गांव मंदिर व श्मशान भूमि पर 363 खेजड़ली के वृक्ष लगाए। इस कार्यक्रम में सभी जगह से गणमान्य व्यक्ति व पदाधिकारीगण पहुंचे। अगले वर्ष 283वां शहीदी दिवस जण्डवाला बिश्नोइयान में मनाया जाएगा।

❑ **इन्द्रजीत धारणियां,** सचिव,
बिश्नोई सभा, डबवाली

जन्माष्टमी महापर्व पर जागरण का आयोजन

बिश्नोई समाज के संस्थापक श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान का अवतार दिवस जन्माष्टमी श्री गंगानगर के बिश्नोई समाज ने बड़ी ही श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाया। इस अवसर पर बिश्नोई समाज की अनेक संस्थाओं ने अपने स्तर पर कार्यक्रम आयोजित किए। इन कार्यक्रमों में समाज के प्रत्येक वर्ग ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।

जन्माष्टमी पर्व का मुख्य कार्यक्रम श्री गंगानगर जिले के जिला मुख्यालय पर स्थित बिश्नोई मन्दिर पर मनाया गया। इस अवसर पर जागरण का आयोजन हुआ जिसमें समाज के विद्वान गायणाचार्य सीताराम लोहमरोड़ एण्ड पार्टी, रायसिंह नगर ने जम्भेश्वर भगवान की महिमा का गायन कर उपस्थित श्रद्धालुओं को भाव विभोर कर दिया।

प्रात:काल 8 बजे हवन कर पाहल बनाया गया। हवन पाहल कार्यक्रम के पश्चात श्री बिश्नोई सभा की साधारण सभा की बैठक आयोजित की गई जिसकी अध्यक्षता श्री मनफूल बेनीवाल ने की। बैठक में वर्ष भर में किए जाने वाले सामाजिक व धार्मिक कार्यों के बारे में विचार-विमर्श किया गया। बैठक में सभा की नई कार्यकारिणी का गठन किया गया जिसमें प्रधान शिवकुमार सहारण, सचिव सुभाष कड़वासरा, कोषाध्यक्ष हंसराज धतरवाल चुने गए। कार्यकारिणी में व. उपप्रधान मनफूल सिहाग, उपप्रधान संतकुमार पंवार, कृष्ण भादू, देवेन्द्र रोहज, इन्द्रजीत एडवोकेट, ज्ञान पंवार को चुना गया। सभा की कार्यकारिणी का कार्यकाल दो वर्ष रखने का निर्णय लिया गया। सभा का वित्तीय लेखा जोखा सचिव सुभाष कड़वासरा ने पेश किया। इस अवसर पर रूपाराम बिश्नोई एसई पी.डब्ल्यूडी, डी.ए.वी. स्कूल के प्रिंसीपल राजाराम बिश्नोई, भूपसिंह सीगड़, अतुल मांझू, सुभाष थापन, सुभाष भादू, श्यामसुन्दर जाला, छात्र संघ अध्यक्ष मुकेश गोदारा सहित समाज के सैकड़ों लोग उपस्थित थे। सभा के नव नियुक्त प्रधान श्री सहारण ने कहा कि वे सामाजिक उत्थान हेतु सदैव प्रयासर रहेंगे।

❑ **पवन ज्याणी,** पत्रकार
जोड़किया, श्रीगंगानगर

समेलिया धाम में जन्माष्टमी महापर्व का आयोजन

बिश्नोई समाज के प्राचीन धाम समेलिया (भीलवाड़ा राज.) में गुरु जम्भेश्वर भगवान के अवतार दिवस पर

जन्माष्टमी पर्व बड़े ही श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाया। इसी दिन रात्रि में जागरण का आयोजन भी किया गया। इस अवसर पर लंगर का आयोजन हुआ। प्रात:काल 8 बजे शब्दों का पाठ कर पाहल बनाया। पाहल ग्रहण कर सभी ने धर्म मार्ग पर चलने का संकल्प लिया। कार्यक्रम में बिश्नोई सभा भीलवाड़ा की कार्यकारिणी के पदाधिकारी, सदस्यगण, धाम के महन्त भगवान प्रकाश जी महेशानन्द जी विशेष रूप से उपस्थित रहे।

बीकानेर में गुरु जम्भेश्वर जी का 560वां जन्मोत्सव मनाया गया

बिश्नोई धर्म प्रवर्तक श्री गुरु जम्भेश्वर महाराज का 560वां अवतार दिवस सोमवार 22 अगस्त 2011 को श्री गुरु जम्भेश्वर महाराज चेरिटेबल ट्रस्ट के सौजन्य से बिश्नोई धर्मशाला एवं मन्दिर पब्लिक पार्क बीकानेर के प्रांगण में मनाया गया। जन्माष्टमी पर्व का आगमन हमारे जीवन को स्फूर्ति व आनन्द रस से सराबोर कर देता है। समस्त हिन्दू समाज विशेषकर बिश्नोई समाज में इस महोत्सव का विशेष महत्व है। दो दिवसीय अवतार दिवस समारोह जन्माष्टमी और उसके दूसरे दिन धूमधाम से आयोजित किया गया। संध्या को जागरण हुआ जिसमें समाज के गायणाचार्य श्री हीरालाल जी, हनुमान जी, मास्टर जी और उनके साथियों ने सारी रात जांभोजी की आरती, साखी और भजन से सभी श्रद्धालुओं का मन विभोर कर दिया।

पंजाब के बिश्नोई क्षेत्र में भगवान श्री जाम्भोजी का जन्मोत्सव मनाया

योगीराज ब्रह्मलीन स्वामी श्री ब्रह्मदास जी महाराज की तपोस्थली मेहराणा धोरा पर भगवान श्री गुरु जम्भेश्वर महाराज का जन्मोत्सव पूरे हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। जन्माष्टमी से पूर्व सात दिन तक श्री जाम्भाणी हरिकथा ज्ञान यज्ञ सप्ताह का आयोजन किया गया। कथा में व्यासपीठ पर मेहराणा धोरा के महन्त स्वामी श्री मनोहरदास जी शास्त्री विराजमान हुए और श्री मुख से प्रवचनों की अमृतवर्षा करते हुए श्रोताओं को भगवान श्री जाम्भोजी के बताए सन्मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया। अष्टमी को रात्रि जागरण, चन्द्रोदय पर जन्मोत्सव की बधाई और नवमी को सुबह हवन, पाहल के साथ मेले का शुभारम्भ हुआ। मेले में आसपास के क्षेत्र के अलावा हरियाणा, राजस्थान से पहुंचे लोगों ने गुरु महाराज के दर्शन किए, मेले का बाजार दर्शनीय था। मेहराणा धोरा सेवक दल के सदस्यों ने पूरी तन्मयता से सेवा की। इस अवसर पर श्रद्धालुओं के लिए गोदारा परिवार की ओर से भण्डारा भी चलाया गया तथा मेहराणा धोरा मन्दिर कमेटी के अध्यक्ष साहब राम गोदारा, स्वामी नैनूराम जी, स्वामी कालूराम जी, स्वामी प्रेमदास जी, बीरबल राय गायणाचार्य, राधेश्याम धत्तरवाल, देवेन्द्र डेलू आदि ने व्यवस्था बनाने में अपना सहयोग दिया। क्षेत्र के प्राचीन मन्दिर हिम्मतपुरा में भी जन्माष्टमी पर्व बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इसके अलावा पंजाब क्षेत्र के हरिपुरा आदि दूसरे गांवों से भी जन्माष्टमी मनाने के समाचार प्राप्त हुए।

❑ **विनोद जम्भदास**
हिम्मतपुरा, अबोहर, पंजाब

शहीदी स्थल बारासण में जाम्भाणी हरिकथा सम्पन्न

बाडमेर जिले के उपखण्ड गुड़ामालानी से 15 कि.मी. दूर बारासण गांव में शहीदी स्थल पर जाम्भाणी हरिकथा का आयोजन 26 से 30 जुलाई तक श्रावण माह की अमावस्या को शहीद मेले का सम्पन्न हुआ। पांच दिवसीय चले विराट हरिकथा के आयोजन को समाज के विद्वान परम पूज्य आचार्य डा. गोरधन राम जी शिक्षा शास्त्री ने हरिकथा का अमृत पान करवाया। इस अवसर पर समाज के लगभग तीन दर्जन संतों एवं उम्मेदाराम पूर्व आईजी ने आपके मुखारविन्द से ज्ञान गंगा प्रवाहित की। 30 जुलाई को प्रात: 8 से 10 बजे तक 120 शब्दों के उच्चारण के साथ यज्ञ करके अमृत पाहल बनाया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि पूर्व मोनेटरिंग सलाहकार एलआर बिश्नोई, अध्यक्षता बिश्नोई समाज गुड़ामालानी के अध्यक्ष श्री धीराराम जी मांजू (पूर्व सरपंच नगर), विशिष्ट अतिथि पूर्व आईजी उम्मेदाराम जी, सुखराम जी ढाका एडवोकेट हाईकोर्ट जोधपुर, श्री भजनलाल जी AA क्लास ठेकेदार उपस्थित थे। गुरु जम्भेश्वर भगवान के निर्माणाधीन मंदिर में भक्तों ने लगभग सात लाख रुपये की राशि दान दी। इस पूरे कार्यक्रम के दौरान मंच संचालन श्री बाबूलाल जी मांजू (पंचायत समिति सदस्य) ने किया।

❑ **उम्मेदाराम खिचड़**, सहमंत्री
भा.कि.सं., गुड़ामालानी, बाड़मेर (राज.)

अ.भा. बिश्नोई युवा संगठन द्वारा भजन संध्या आयोजित

अखिल भारतीय बिश्नोई युवा संगठन द्वारा भजन संध्या का आयोजन किया गया। स्थानीय मारवाड़ी पंचायतवाड़ी,

2 पंजरापोल लेन में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी एवं श्री गुरु जम्भेश्वर जन्माष्टमी की पूर्व संध्या पर रविवार 21 अगस्त 2011 को सायं 6 बजे से देर रात्रि तक भजन संध्या का आयोजन स्थानीय बिश्नोई समाज एवं बिश्नोई युवा संगठन के कार्यकर्ताओं की उपस्थिति में संपन्न हुआ। जिसमें लोकप्रिय गायक कलाकार मनीराम लटियाल व उनकी भजन मंडली ने श्रीकृष्ण भगवान एवं श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान के सुमधुर धार्मिक गानों से अपनी कला प्रस्तुति दी।

❑ **ओमप्रकाश ढाका,** मुम्बई

खेजड़ली बलिदान दिवस पर गोष्ठी आयोजित

7 सितम्बर को बिश्नोई समाज सेवा समिति की ओर से श्री जम्भेश्वर धर्मशाला, लाइन पार मुरादाबाद में गोष्ठी का आयोजन किया गया। प्रातः 9 बजे यज्ञ हवन किया गया। गोष्ठी में खेजड़ली के शहीदों को श्रद्धांजली दी गई। वक्ताओं ने वृक्ष रक्षा, जीव रक्षा व पर्यावरण सुरक्षा के लिए बिश्नोई समाज द्वारा किए गए कार्यों का वर्णन किया। गोष्ठी की अध्यक्षता श्री योगेन्द्र पाल सिंह बिश्नोई ने की तथा संचालन अनिल बिश्नोई ने किया। गोष्ठी में ओम प्रकाश बिश्नोई, जयप्रकाश बिश्नोई, ऋषि राम बिश्नोई, डा. नरेन्द्र पाल सिंह, पं. हरिओम गौड़, श्रीमती शारदा रानी, पूर्णिमा बिश्नोई व राधा बिश्नोई उपस्थित रहे।

इससे पहले प्रातः 8 बजे बिश्नोई कालोनी, दिल्ली रोड में वृक्षा रोपण किया गया। इसमें श्री बलबीर सिंह बिश्नोई का सहयोग मुख्य रूप से रहा।

❑ **ओम प्रकाश बिश्नोई**
बिश्नोई समाज सेवा समिति, मुरादाबाद

बिश्नोई सभा सिरसा का स्थापना दिवस समारोह सम्पन्न

बिश्नोई सभा सिरसा का 37वां स्थापना दिवस समारोह बड़ी धूमधाम से 8 से 13 सितम्बर तक मनाया गया। दिनांक 8 से 12 सितम्बर तक मंदिर प्रांगण में श्रद्धेय संत आचार्य डॉ. गोवर्धन राम शिक्षा शस्त्री द्वारा जाम्भाणी हरि कथा में बिश्नोई समाज को श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान के आदेशों का पालन करने व अपने जीवन को सफल बनाने के लिए उन पर चलने का संदेश दिया गया। दिनांक 9 सितम्बर को समाज में बढ़ती नशा प्रवृत्ति एवं उसके निराकरण पर भाषण प्रतियोगिता आयोजित की गई। दिनांक 10 सितम्बर को 'बिश्नोई विवाह पद्धति, रीति-रिवाज एवं परम्पराएं' विषय पर एक परिचर्चा रखी गई। जिसमें श्री जगदीश बैनीवाल, मनुदत बिश्नोई, तुलसीराम सीगड़, आर.डी. बिश्नोई ने भाग लिया। दिनांक 11 सितम्बर को 'दहेज प्रथा: उचित या अनुचित' पर वाद-विवाद प्रतियोगिता आयोजित की गई। जिसमें काफी छात्र, छात्राओं ने भाग लिया। दिनांक 13 सितम्बर को प्रातः 7 बजे मंदिर पर ध्वजारोहण महन्त सुन्द्राईनाथ (डेरा सरसाई नाथ) द्वारा किया गया और 9 बजे से यज्ञ आरम्भ हुआ और पाहल अभिमंत्रित किया गया। मुख्य समारोह प्रातः 10.30 बजे आरम्भ किया गया जिसकी अध्यक्षता आचार्य संत गोवर्धन रामजी ने की और हरियाणा पिछड़ा वर्ग आयोग के सदस्य श्री जयसिंह बिश्नोई मुख्य अतिथि थे। उनके आने पर सभा की कार्यकारिणी ने स्वागत किया। इस अवसर पर बिश्नोई सभा पंचकुला के प्रधान श्री अंचितराम गोदारा, पंचकुला मंदिर निर्माण के प्रधान राजेन्द्र पूनिया, बिश्नोई सभा हिसार के मंत्री श्री मनोहर लाल गोदारा, महराणा धोरा (पंजाब) के प्रधान श्री साहबराम गोदारा, डबवाली मंदिर के प्रधान श्री कृष्णलाल जाजुदा, सेवक दल के प्रधान श्री कृष्ण सिगड़, रतिया मंदिर के प्रधान श्री रामस्वरूप जी, मण्डी आदमपुर के कोषाध्यक्ष श्री राजाराम खिचड़, पूर्व जीव रक्षाप्रधान श्री हनुमान सिगड़, नीमड़ी (फतेहाबाद) से पूर्व गृह मंत्री श्री मनीराम गोदारा के पौत्र सुधीर गोदारा आदि प्रमुख अतिथि उपस्थित थे।

इस समारोह में समाज के उत्कृष्ट कार्य करने वाली प्रतिभाओं को सम्मानित भी किया गया। समारोह का आरम्भ श्री मनीराम सहारण प्रचार सचिव ने अध्यक्ष मुख्य अतिथियों एवं शहर व गांव ढाणियों से पधारे सभी महानुभावों माताओं व बहनों का हार्दिक अभिनंदन करके किया। सभी के मंत्री श्री ओ.पी. बिश्नोई ने बिश्नोई सभा, सिरसा की पिछले एक वर्ष की गतिविधियों एवं कार्यकलापों पर प्रकाश डाला और आय-व्यय का ब्यौरा प्रस्तुत किया।

मुख्य अतिथि श्री जयसिंह बिश्नोई ने अपने संबोधन में बिश्नोई सभा, सिरसा की कार्य प्रणाली की प्रशंसा की और कहा कि इस सभा ने 36 वर्ष में जो उन्नति की है वह बिश्नोई समाज में एक उदाहरण प्रस्तुत करती है।

श्री साहबराम गोदारा व आचार्य संत डॉ. गोवर्धनराम जी ने भी सभा को संबोधित किया। अंत में सभा प्रधान श्री खेमचन्द बैनीवाल ने सभी का धन्यवाद किया।

❑ **ओ.पी. बिश्नोई,** मंत्री
बिश्नोई सभा, सिरसा